



श्रीमंत बाळासाहेब,

चीफ ऑफ मिरज, के. सी. आय. ई.

जो कि कई एर विद्याओंके अतिरिक्त मंगीत विद्याके पूर्ण
विद्वान् है और जिन्होंने मुझे इस विद्याके सीखनेमें पूर्ण
सहायता देकर गुणग्राह्यता का परिचय दिया है.
वी सेवामें इग पुस्तकको मैं बडे नम्र और
प्रेमभावने समर्पण करता हूं.

विष्णु दिगंबर.

अनुक्रमणिका.

| नंवर. | । | । | । | पृष्ठ. |
|-------|------------------------------------|-----|-----|--------|
| १ | गानेवालोंको उपयुक्त सूचना | ... | ... | १—२ |
| २ | गायन दोष | ... | ... | २—५ |
| ३ | गायन गुण | ... | ... | ६—९ |
| ४ | संगीतमा अर्थ और सप्तस्वरोंमा वर्णन | ... | ... | १०—११ |
| ५ | सप्तकोके नाम और गायन लेखनरीति | ... | ... | ११—१२ |
| ६ | आरोह, अवरोह और स्वरोंके भेद | ... | ... | १३—१५ |
| ७ | चतस्रजाति लयकारी | .. | ... | १६—२६ |
| ८ | तिस्रजाति लयकारी | .. | ... | २७—३१ |
| ९ | तालमा नवाशा और ब्यान | ... | ... | ३१—३२ |
| १० | रागके छे किसम | ... | ... | ३३—३४ |
| ११ | अंजनरीति पढनेकी रीति | ... | ... | ३४—३४ |
| १२ | मूर्छनाका वर्णन | ... | ... | ३४—३५ |
| १३ | आर्षिक, गाथिक | ... | ... | ३५—३६ |
| १४ | शुद्ध और फोमल स्वर | ... | .. | ३७—५० |
| १५ | गमकका वर्णन... | ... | ... | ५१—५२ |

प्रस्तावना.

प्रथमावृत्ति.

इस पुस्तक के बनाने का मुख्य उद्देश यह है कि हमारी प्राचीन ऋषि प्रणीत संगीत विद्या जो दिन प्रति दिन लोप होती जाती है उसको फिर ज लाया जाये. इस विद्योसे महर्षि लोग अपने मनुष्यत्व का पूर्ण लाभ लेनेके लिये गामवेदके गानद्वारा परमात्मा को प्रसन्न कर, उमशी पृथोसे सत्य-तत्त्वों का प्रचार अपार भयत्नामर का मुखसे उद्घोषण कर जाते थे जिस विद्याका प्रभाव, न केवल देवता, और मनुष्यपरही था किंतु सब प्राणी मात्रपर ऐसा; विशाल था कि अचरको चर और चरको अचर बनानेके लिये चमत्कार दरसाया करता था. विद्या अपने प्रभावसे प्रकृति देवोंकोभी अपने नियमित कार्य के करनेमें विरतीत कर देती थी क्योंकि, उक्त विद्या अत्यंत दुर्लभ शोभने मग पुरुषकोभी ऐसे आनंद मनु-भ्रम प्रभावित कर उसके सब दुःखोंको विनाश कर, ऐसे सुखको अनुभव कराती थी, जिस सुखको उत्पन्न करनेके लिये सांसारिक सर्व साधन अकिंचित हैं. ऐसी सुखरती महा विद्या आज इसके समयमें दिन प्रति दिन इस भारत वर्षमें लोप होता जाता है, और उच्चतम संभूत मज्जन लोगोंको इस विद्योसे अज्ञान होना जाती है और इस विद्योकी अज्ञानता कारण जहाँ तक मैंने सोचा है यह प्रतीत होता है कि माना कि जिनके ही रीति जो हमारे देशके उच्चतम मज्जमें प्रचलित थी वहाँकी विपरीत मर्तके कारण भारतमें लोप हो गई. और इसके लोप होनेसे ही मनुष्य और प्राचीन मंत्रों आचार्यों की मान्य रीतिभी मान्यही जाती रही. इसीलिये जो कुछ गाने, लोप इस समयमें मिटने हैं उनको भी निरानेमें अति ध्यान देना पड़ती है. उन सब कठिनताओं को दूर करनेके लिये और प्राचीन

रीति की विद्या को जगनेके गिये हमने नई अमन राति (गाना लिखनेका वाद्यदा) निकाली है जिसके जरियेसे सिसखनेमें और साखनेमें भी आसानी हाता जाता है जिसका अनुभव आज चास साल होनेको आये हम्ने और गार्धर्व महा विद्यालयके विद्याधानाने ररके देखा है इससे हम कह सकते हैं कि अगर ये अरु रीति सब भारतमें प्रचलित हो जाय तो फिर इस विद्याका पुनजावन जरूरहा होगा

इस जवन रीतिसे चिह्नोरा बयान अरतक हमारे यहांके संगीत चाल-चोध प्रथम भागमें था, परन्तु अब इसका बयान और संगीत शास्त्रिय विषयोंका बयान ये सब विषय क्रमसे इसी पुस्तकके भागोंमें दये जावेंगे इस वास्ते इस पुस्तकका नाम संगीत तत्वदर्शक रखा है इसके औरभी भाग बनाये जावेंगे.

अतमें अपने गुरु श्रीमान् गायनाचार्य पं. वाल्मिक्य षोवाका कोटि २ धन्यवाद करता हू कारण उनहीके शुद्ध अत करणसे यह विद्या मुझको प्राप्त हुई है

चतुर्थावृत्ति.

इस संगीत तत्वदर्शक पुस्तककी तृतीय वृत्ति समाप्त होनेसे यह चतुर्थावृत्ति प्रक शित करनेका समय ईश्वरकी कृपासे हमको मिला, इसलिये हम सचिदानन्दका कोर्वा २ धन्यवाद करते हैं.

॥ शुभम् ॥

आपका,

विष्णु दिगंबर पल्लुस्कर.

संगीत-तत्वदर्शक.

गानेवालोंके लिये उपयुक्त सूचना

(१) प्रथम हमें गानेवाले को चर्चिये कि, वह अपने त्रसचर्य का जालनक हों मरे पालन करे कारण की त्रसचर्य अच्छा होनेमें बीचमें फाटे बिगाड नहीं होने पाता जब बीच अच्छा हुआ तो तन्दुरस्ती भी आपही अच्छा रहती है, तन्दुरस्ती अच्छी होनेमें बुद्धि निर्मल हो जाती है और शरीर में हृग्णक प्रकारका बल प्राप्त होता है. और बल होनेमें हृग्णक कामना मिट्ट होती है अतएव हृग्णक गानेवाले को सबसे पहिले अपना त्रसचर्य की रक्षा करनी उचित है निम्ने गान में मधुग्ता और और मग्ने को मन्त्र, मन्थ और तार मसको में चारे चहा उगा रने और चदाने में सब तरहका मरीता हो और अघान में भी किसी तरहका ढोप न रह.

(२) आजकल क प्राय तिनके गानेवाले है जहा गान करनेका समय आया, उर ना सुले अपना गला बिगाडनेका कारण नाली देने है परन्तु याम्नाम उनमें बहुत टुर्व्यमनी

ओर दुराचारी होते हैं, इस कारण उनके विकार कभी कम नहीं होते यदि वह लोग अपने आचरणों को शुद्ध रखें तो गानमें उनको किसी प्रकारकी व्याधि भी पीड़ित न करेगी।

(३) इसलिये गान करनेवालों को हर एक दुर्व्यसन से बचना चाहिये क्योंकि दुर्व्यसन में पडनेसे आवाज में विकार उत्पन्न होता है

(४) खानेमें भी ऐसी चीजें नहीं खानी चाहिये जिनसे रुक बढे या शुष्कना उत्पन्न हो एकदि ममय ठंडी और गरम चीज नहीं खानी चाहिये क्योंकि ऐसा करनेसे सरदी गरमी होकर अज्ञान बिगड जाती है तात्पर्य यह है कि जिन चीजोंमें आरोग्यतामें थोडा भी विघ्न पडे ऐसी चीजोंसे दूर रहिनाही श्रेष्ठ है।

(५) गानविद्याभिलाषियों को इस बातपर भी ध्यान देना चाहिये कि वह सर्काल मधुरता ओर शुद्धता से बोलें क्यों कि बहुत जोरसे ओर खेचके बात करनेसे भी आवाज दोषयुक्त होता है ओर गानेवालों की वृत्तिभी सास्त्रीक होनी चाहिये।

गायन दोष.

प्रथम हर एक गायक को इस बातका विचार करना चाहिये

किं किमी तम्हसे अपने गानमें किसी किमम का दोष न होने,
 क्याकि पाय गानेवाले में गाते समय बहुतमी खराब आदत
 लगा हुई देखनेमें आती है सो उन खराब आदतों से बचनेका
 गान सीखनभाला को ब्याल रचना जरूरी है

८१

अन गानमें जो दोष आते हैं उनको लिखते हैं नारामुनि
 करते हैं

श्लोक—कपित भीत मुद्घष्टमपक्तमनुनासिकम् ॥
 कारुस्वर शीपगत तथा स्थान विवर्तितम् ॥
 बिस्वर विरमचक्र विच्छिष्ट बिषमाहृतम् ॥
 व्यङ्ग्य तादृहिनिर गातुर्गोपाचतुल्य ॥

अर्थ—१ कपित याने गाते समय स्वर हिलता रहे, २ भीत
 रीतिसे गाना, ३ उद्घृष्ट गीतिसे गाना, ४ अव्यक्त, याने वर्णा-
 च्छाया ठीक न होना, ५ नारामेंमे अवाच निशालना, ६ कार-
 म्बरम गाना, ७ अति उचे स्वर में गाना, ८ स्वरकों अपनी २
 चगहपर न लगाना, ९ दुमरे स्वर लगाना, १० अरसिक गाना,
 ११ अनेहुण मे गाना, १२ चरुगतके वंगरे स्वरको धरा देना,
 १३ व्याकुल गीतिसे गाना, १४ बेताल याने तालरहित गाना

हमारे महर्षियोंके मतमें और भी दोष माने गये हैं सो उन
 कोभी लिखते हैं. १ सद्रष्ट, २ सूतकारी, ३ कराली, ४ करम,
 ५ उन्मत्त, ६ भोवद, ७ तुंबडी, ८ बन्नी ० प्रमारी १० निशी

लके, १-१ अनवस्थित; १-२, मिश्रक; १-३ अनवधान, इन दोषोंसे वंजित गान होना चाहिये; उनके अलग, २, अर्थ यह हैं.

१) सद्रष्ट वह है जो रसहीन और दाँतसे दवाकर शब्दका उच्चार है.

२) सूतकारी दोष उसको कहना चाहिये कि बारबार सूतकार शब्द निकले.

३ कराली दोष उसका नाम है जिसमें चेहरा गाते समय भयानक नजर आवे.

४ करभ दोष वह है जो गाते समय शिर हुकाके कंधेपर कपोल धरके या गालपर या कानपर हात रखके गाना.

५ उद्वृष्ट वह है जो गाते समय बंकरे के सदृश स्वस्व उच्चारण करना.

६ भौवक दोष वह है कि गाते समय चहरेकी नसे खंडी हो जावे.

७ तुंबकी वह है कि तुंबके सदृश गला फूलके गाया जावे;

८ बकी वह है जो गाते समय कंठको टेढ़ा करके गान किया जावे.

९ प्रसारी वह है जो गानोंको फुलके गाना होवे.

१०-निमीलक वह है जो गाते समय नेत्र भिंट जावे.

११. अनवस्थित वह है जिसमें १ मूलाधार, २ अनादत
 ३ ब्रह्मंघ्न इन तीन स्थानों का बोध न हो।

१२. मिश्रक वह है जिस रागमें जो स्वर लगाने चाहिये उनके
 अतिरिक्त दूसरे स्वर भी लगे।

१३. अतुल्य वद है जो स्यादि आदि अलंकारों के क्रमसे न
 किया जावे और चित्त व्यग्र होवे।

ऊपर लिखे हुए दोषोंके अलावा जो आजकलके समयमें
 प्रायः बहुतमे गानेवालोंमें फैला हुआ एक बड़ा भारी दोष है कि,
 जिसके जरीयेसे जो हमारी प्राचीन विद्या आला-दजेपर पहुंची
 थी उसका गिरना शुरू हुआ इसका कारण अगर देखीं जाय तो
 यहि मालूम होता है कि जिसको अंध परंपरा कहते हैं
 अंध परंपरा उसको कहना चाहिये कि जिसको स्वर शास्त्रका
 पूर्ण ज्ञान नहीं हुआ होगा, याने जो स्वरांको, (थिअरीको प्रकृति-
 फली) नहीं जानता होगा, या जिन्होंने संगीत शास्त्रको पढा नहीं
 होगा, और धूपद, ख्याल, टुंबरी, टुंप्पा, गैजल, इनके अक्षरके
 स्वर दूसरेके गलेकी नकलसे सीखकर गाना याने कोई नोटेशनके
 सिस्टीम वगैरै सीखना इसीका नाम अंध परंपरा दोष है और इ-
 सीके सबसे गानेवालों की इस समयपर कोई कदर नहीं नहीं

कारण प्राचीन समयमें हमारे ऋषि लोग कोई बात भिन्नगीके व-
गैर याने शास्त्रके वगैर किसी विद्याको पढाते नहीं थे और पढने-
भी नहीं थे और हरएक विद्या नोटेशन सिस्टिमपर सिखाया क-
रने थे और सीखतेभी थे मसरून सामवेद को जब पढते थे तब
सामवेद के गानका नोटेशन पढने को सिखते थे इसी वास्ते उ-
स समयमें इस विद्याकी बड़ी भारी कदर थी, अब गानेवालों में
आगे लिखेहुए गुणों की बड़ी भारी आवश्यकता है नारदीय शि-
क्षाका कथन है.

गायनगुण.

गायनस्य तु दशविधा गुणवृत्तिस्तद्यथा, रक्त पूर्ण अलंकृतं, प्रसक्तं,
व्यक्तं, विक्रुष्टं, श्लक्ष्णं, समं सुकुमार मधुरमितिगुणः

- १ तत्र रक्तं नाम खेण खीणा स्वराणामेकीभावे रक्तमित्युच्यते.
- २ पूर्णं नाम स्वरक्षुतिपूरणाच्छन्दपादाक्षरसंयोगात् पूर्णं मित्युच्यते.
- ३ अलंकृतं नामोरसिशिरसि कंठयुक्तमित्यलंकृतं
- ४ प्रसक्तं नामापगतातद्गत निर्विशकं प्रसक्तमित्युच्यते.
- ५ व्यक्तं नाम पदपदार्थप्रकृता विकारागमलोपकृतद्वित समासबाहुनि-
पातोपसर्गस्वरलिङ्ग वृत्तिवादिभिः विभक्त्यर्थं यच्चनागां सम्यगुपपादनं व्य-
क्तमित्युच्यते.

६ विक्रुष्टं नामोष्णैरुच्चारितं व्यक्त पदाक्षरमिति विक्रुष्टं

७ श्लक्ष्णं नामान्नमन्नविलंबित उच्च मीघ स्वर समाहारं हेतु ताडो
पत्रबादिमिहपपादनादिभिः श्लक्ष्णमित्युच्यते

८ समं नामावाप निर्वाप प्रदेश प्रत्यक्षरथानानां समासः कर्ममि-
त्युच्यते.

९ सुकुमारं नाम सुदुपदधर्षस्वरवृद्धरणदुष्टं सुकुमार मित्युच्यते

१० मधुरं नाम स्वरमाधोपमीत ललित पादाक्षर गुण सम्यक् मधुर-
मित्युच्यते.

इति नारदीय शिखायां गायनगुणोक्तं गान मयति भवन्ति खान टोड

ऊपर लिखे हुये दशगुणोंका अलग अलग

भावार्थ कहते हैं.

रक्तं—इसका मतलब यह है, कि वेणुवाणा इन दोनोंका स्व-एक करना इसका भावार्थ यह है कि हर एक गानेवाले को गाना शुरू करनेके पिले जितने वाचों की अवश्यकता लगती है उन वाचों को स्वरो में ठीक मिलाना चाहिये, जबतक सब वाच स्वरोमें न मिलेंगे तबतक गाना शुरू नहीं करना चाहिये.

२ पूर्ण—इसका मतलब यह है, कि स्वर श्रुती, छंद, पादाक्षर, इनको ठीक रीतिसे कहा जावे याने हर एक स्वर अपने अपने जगहपर ठीक लगाना चाहिये और पद अक्षरका मेल ठीक रहना चाहिये.

अलंघ्यते—इसका तात्पर्य यह है कि उर, शिर और कंठ इन स्थानोंपर आवाजका ठीक उच्चारण होना चाहिये.

४ प्रसन्न—इसका मतलब यह है, कि आवाजमें गंभीरता और शंका रहित आवाजको चलना चाहिये.

५ व्यक्तं—का मतलब यह है, कि जो कोई गाने वाली चीज या श्लोक या कोई वेदका मंत्र होगा, उसमें पद पदार्थ याने पदोंका ठीक ठीक अर्थ होवे और विभक्ति, समास दचन याने जो कोई गाना होगा उसमें अर्थ ठीक होवे और व्याकरणभी ठीक होवे.

६ विकुण्ठं—का मतलब यह है, कि तार सप्तरुके स्वरोमें जो अक्षर कहा जावेगा उसका उच्चारण स्पष्ट होना चाहिये.

श्लक्ष्णं—का मतलब यह है, कि द्रुत, विलम्बित और मध्य जो लयकारी है उसमें प्रवीणता होना चाहिये और उदात्त, अनुदात्त, स्वराँका अच्छी तरहसे ज्ञान होना चाहिये उन पदोंपर जोर ठीक आना चाहिये.

८ समं—का मतलब यह है, कि जहाँ जहाँ पर समासे बनते होंगे वहाँ पर ठीक सम आना चाहिये.

९ सुकुमारं—का मतलब यह है, कि मृदु वर्णमें स्वर जहाँ आवेंगे वहाँ उनका मृदुताके साथ उच्चारण होना चाहिये.

१० मधुरं—का तात्पर्य यह है, कि गानेमें स्वर वर्ण पद जो कुछ आवेंगे वो मधुर होना चाहिये, याने कानको आनन्द देने वाले हों और भी हमारे ऋषियोंका ऐसा मत है

श्लोक—सुरसर सुरसैव सुरागमधुराक्षरम् ।

सालकार प्रमाण च पदत्रिध गीतलक्षणम् ॥

ऊपर लिखेहुए गुणोंके अलावा औरभी गुण गाने वालोंमें होने अवश्य है, सभाजीर्तपना राग द्वेष रहितता, नवीन युक्तीमें प्रवीणता, गानेमें धीरता, और यथा लाभमें सतुष्टता, ऊपर लिखे हुये सब गुण ग्रहण किया हुवा जो गानेवाला होगा उसके गानसे उसको नाद विद्याका पूर्ण ज्ञान हो सकता है और सब सुखको अनुभव करता हुवा नाद योगका साधन करते करते अपार भवसागरसे सहजही पार हो जाता है और ऐसा जो गाना करनेवालेकी भी चित्तवृत्ति पवित्र बन जाती है और ऐसा जो गाना है—उसको ऋषि श्लोक देवदुल्य गाना

कहते हैं और ऐसीही गाना हमारे प्राणियोंके मतमें परमात्मा को प्रमत्त करता है.

हमके विपरीत गाना करनेवाले लोगोंने लक्षण बद्धा जिने गानेवाले होते हैं वाट द्रव्य लोलुप होकर निर्लज्जताको धारण करके सुशामतायां भङ्गना करते हुए मिथ्याश्रद्धा वनके, निराश्र भागने हुये और सुनने वालेको भी अपवित्र बनाते हुए नरक के भोगी बनते हैं, इसी वास्ते हर एक गानेवालोंने गुणको प्रदूषण करते हुए अशुभगुणा को उत्पन्ना चाहिये, ताके इस रीतिमें अर परलोकमें हित हे गा

प्रथम प्रत्येक मनुष्य मात्रको इस बातका विचार करना चाहिये कि उसका आनुष्य रित्त रीतिसे आनन्दमें व्यतीत होगा, कारण हमारे बड़े बड़े महाप और महात्माओं का यही मन है इसी वास्ते उन्होंने कहा है कि "आनन्द परम सुखम्" उप आनन्दका लभ सदृज और सुलभ कैं नही वास्तुमें है. इसका विचार बड़े बड़े बुद्धमान् लोगोंने जहा तक किया है, वहा तक यही माना गया है कि नन्द रिया अर्थात् (संगीत विद्या) के वास्ते किसीभी वास्तुमें आनन्द नही है यह प्रसिद्धी है 'सद्य' करति गधगी, अर्थात् तत्काल आनन्दका फल दे-वाली यह संगीत विद्या है.

अब हम संगीत शब्दका अर्थ कहते हैं. सम+गीत मिलके संगीत शब्द हुआ है. सम याने उत्तम रीतिसे और गीत अर्थ गाना उत्तम रीतिसे जो गाना है अर्थात् शास्त्र रीतिसे सप्त स्वर मूछना, ताल और गमक समेत जो गान है उस सब समूह का नाम संगीत है.

“गीतवादित्रनृत्यानां त्रय संगीतमुच्यते”

इन तीनोंमेंसे मुख्य गायन है. संगीत रत्नकरमेंभी ऐसाही कहा है. “नृत्य वाद्यानुगंप्रोक्तं वाद्यं—गीतानुवर्तिच” कारण गान स्वयं प्रकाशित है वादन और नृत्य यह दूसरेकी सहायतासे होते हैं इसकारण गाना मुख्य माना है.

अब गानेके उपयुक्त जो सात स्वर हैं उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं.

षड्ज, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद.

इन स्वरोंके उच्चारण करते समय अर्थात् गानेके समय इनके यह उच्चारण क्रमसे होते हैं.

सा, रि, ग, म, प, ध, नि.

इन सातों स्वरों में अपस में कितना अंतर (फरक) है वह नीचेके नकशेसे मालूम होगा.

| | | | | | | | |
|----|----|---|---|---|---|----|----|
| सा | रि | ग | म | प | ध | नि | सा |
| १ | २ | ५ | ४ | ३ | ५ | १५ | २ |
| | ८ | ४ | ३ | २ | ३ | ८ | |

इस सात स्वरोंके समूहका नाम सप्तक है. और ऐसे सप्तक प्रायः प्रचार में अर्थात् गाने में या वाद्यादि बजाने में तीनही आते हैं इससे अधिक यदि देखा जाय तो कोई वाद्य याने पियानों वगैरे सात सप्तक का काम देते है. परंतु गला हजारों में या लाखों में इतनी उंची आवाज वदाचित्ही देता हो. तीनों सप्तकोंके नाम नीचे लिखे जाते हैं.

मन्द्र, मध्य, और तार.

(१) इनके स्थान यह हैं “ हृदि मंद्रो गले मध्यो मूर्ध्नि तारः इति क्रमान् ” हृदय में जिन स्वरोंका ज्यादा जोर लगता है उनको मद्र सप्तकके स्वर कहते हैं. (जिसको आम लोग खरजका सप्तकके स्वर कहते हैं.

(२) मध्य वह है कि जिन स्वरोंका ज्यादा जोर कंठमें लगता है.

(३) तार वह है कि जिन स्वरोंका ज्यादा जोर तालुस्थानमें लगता है.

अब हम इन तीनों सप्तकोंको क्रमसे एक जगह लिखनेके चास्त सब से जो मुलभ और आसान रीति है उसको लिखते हैं. ताके गाना लिखनेमें किसी तरहकी तफलीक न होवे और गान अठी रीतिसे लिखा जावे. अब बढ लिखनेकी रीति यह है.

इन चार लकीरोंके बीच जो तीन खाली जगह है उन खाली जगहोंके नाम क्रमसे नीचेसे ऊपर तक मद्र, मध्य, आर, तार, ऐसे लिखे जावेंगे, उनके लिखनेका पद्धत ऐसी है

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | |
| मन्द्र | |

अब जिस खाली जगहमें जिस सप्तकका नाम लिखा होगा उसी सप्तकके स्वर उसके आगे खाली जगहमें इस रीति लिख जावेंगे

| | |
|--------|-------------|
| तार | सा री ग म प |
| मध्य | प ध नि सा |
| मन्द्र | सा री ग म |

जब किसी स्वरमें ऊपरके स्वरको या स्वरोंको उच्चारण किया जावे ता उसको शास्त्र रीतिसे आरोह कहते हैं. और इसांतरह जब किसी स्वरसे नीचेवाले स्वर या स्वरोंका उच्चारण किया जावे तो उमने शास्त्रकार अवरोह कहते हैं. वह इस रीतिसे.

| तार | आरोह | सा | अवरोह |
|--------|------------------|----|---------------|
| मध्य | सा रि ग म प ध नि | नि | ध प म ग रि सा |
| मन्द्र | | | |

स्वरोंके भेद.

गानके स्वर ६ प्रकारके होते है और उनका क्रम यह है शुद्ध, कोमल, अतिकोमल, तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम, पन्धु आज कल प्रचारमें प्रायः दोही भेद लोग समझते हैं धी यह है उत्तरा और चढ़ा (तीव्र और कोमल) इसमें ज्यादा स्वरोंका भेद न समझनेके कारण वाक्रीके जो चार भेद हैं दः जिन जिन रागोंमें आते हैं उन रागोंका पूर्ण स्वरूप नहीं दक्षि सद्धता कारण कि, वचनक मनुष्य उन भेदोंको टीक नहीं जान सकता नबतक उन रागोंका स्वरूप किन रीतिसे टीक होवे ! जैसे हारमोनियम बाजेमें सय राग नहीं बज सकते, ऐसा जो लोगोकी मोठी समझ है इसका मूल कारण अगर देखा जाए तो यही प्रतीत होगा कि उन चारों भेदों ने रहित हारमोनियम

वाजा होनेके कारण उसमें राग पूरे बजते नहीं अगर उसमें और चार भेद नये बनाये जायें तो हमारे सब हिंदुस्थानी राग उसमें ठीक ठीक बजेंगे इसमें कोई शंका नहीं. स्वरोंके छे भेद लिखनेके वास्ते ऊनकी निशानियाँ अलग अलग नीचे दी जाती हैं.

नाम.

निशाणी.

शुद्ध.... ϕ

कोमल ... ♣

अतिकोमल.... ♣

तीव्र.... △

तीव्रतर ... △

तीव्रतम ... △

ऊपरके चिन्होंमेंसे कोई चिन्ह जिस स्वरके पहिले दिया होगा उसी स्वरको उन भेदोंके माफक उच्चारण करना होगा. चिन्होंको अंकन रीतिमें इसतरह लिखा होगा.

| | |
|--------|-------------------------|
| तार | सा |
| मध्य | सा ♣ रि ग म प ♣ धे नि । |
| मन्द्र | |

ॐ जरूरी सूचना. ॐ

सप्त स्वरोंमेंसे (सा) (प) ये स्वर हमेशा शुद्ध रहते हैं बाकी जो पाच स्वर हैं उन्हींको विकार होता है

अब हम ' टाडम ' याने ' लय ' अथवा समयके वास्ते निचार करते हैं कारण यह कि जबतक हम कोई लय मुग्गर नहीं करते तबतक किसी स्वरको वा स्वरोंको कितनी देरतक ठहराना और कितने देरतक नहा भाव्यम कर सकते और किनी स्वर या स्वरोंको बिठ्ठुड नहीं लिख सकते.

आजतक हमारा हिंदुस्थानी ' गाना ' नहीं लिखा जाता ऐसा जो बहुत लोगोका समन है उसका मूळ कारण जहातक सोचा गया वहातक यही माना गया है कि जबतक कोई लय मुग्गर करते है, वह इस रीतिसे कि हमारे शास्त्रकारोंके मतमें ' चतस्र लयकारी मुख्य है अब उय चतस्रके कितने विभाग होते है इनकी अलग अलग निशानियां नाँचे दी जाती है सो देखना और इनपर से टाडमको ठीक याद रखना, क्योंकि जबतक नाँचे लिगे हुये टाडमको ठीक याद नहीं बीया जस्येगा तबतक कवनरीतिसा साथ जोर और आधार लयकारी परही हैं इस वास्ते नाँचे दी हुई लय-कारीको पढी (वाच) के साथ गौरमे याद करना चाहिये कि जिसो शक्तीरिति अछा रीतिसे समझ में आ जावे और इत्नाग नई अकनरिति बनोनेका कायदा भाव्यम होनेमे हरएक गानेवाडेके गानेसा नाँचेगन तुरनही बनो में आ जावेगा इस वास्ते बडे प्रेनसे बडी गुस्ताये और बडे ध्यानक साथ नाँचेकी लयकारीको याद करना चाहिये

धन हर एव लयकाराका नाम निशानी गिननी और मात्रा इस नकलेसे माडम हुगी

| नाम. | निशाणी. | स्वर गिनती. | मात्रामें. |
|-------------------|---------|-------------|------------|
| चतस्र | x | १ | ४ |
| गुरु | २ | १ | २ |
| लघु | — | १ | १ |
| द्वित | ० | २ | १ |
| अणुद्वित | ० | ४ | १ |
| अणु अणु द्वित | ० | ८ | १ |
| अणु अणु अणु द्वित | ० | १६ | १ |

उपरके नमूनेमें जो अलग २ लयकारीकी अलग २ निशानीया दी गई हैं उनका बयान नाचे लिखते हैं.

(X) 'यह चतस्रकी निशाणी' है चतस्र उसमें कहते हैं निघमें चार 'मात्रा' के बराबर समय लगे (हरएक मात्राकी लय साधारण रीतिसे एक सेकंडके बराबर होती है) इसवास्ते हरएक 'मात्रापर' ताली देना और जब ऐसी चार 'मात्रा' हो जावेंगी तब मुखसे एक कहिना एन शब्दको चार मात्रामें इस रीतिसे बाटना पहिले मात्रासे 'ए' शुरू हाकर चौथी मात्रापर 'क' खतम हो जावे याने सब मिलके चार मात्रामें ठीक हिसाबसे 'एन' का उच्चारण होजाना चाहिये. उदाहरण —

| | |
|--------|--------------------|
| तार | |
| मध्य | स ग प स X X X X |
| मन्द्र | |

(~) 'यह गुरुकी निशाणी' है. इसकी दो मात्रा है इसवास्ते इसकी दो मात्रातक ठहराना और हरएक मात्रापर ताली देके पहिली मात्रास (ए) शुरू करके दुसरीपर (क) खतम करना.

अब लिखनेमें वह निशाणी इमतरह सरके नीचे दी जावेगी

| | |
|--------|---------------|
| तार | ० ० ० |
| मध्य | ग ध प ग रि स- |
| मन्द्र | |

(—) ' यह निशाणा लघुकी है ' इसकी एक मात्रा होती है इस वास्ते इसको एक मात्रा ठहराना और मात्रा पर तागी देके मुखसे (एक) कहना, लघुकी निशानिया नाचे मुन्ब जावनी

| | |
|--------|----------|
| तार | |
| मध्य | स रि ग प |
| मन्द्र | |

(•) ' यह हुत्तकी निशाणी है ' इसकी आधी मात्रा है इसवास्ते इसको आधी मात्रातक ठहराना परंतु मात्रापर ताली देके मुखसे पहिने आधी मात्रापर (एक) कहना और दूसरी आधी मात्रापर [दो] कहना मित्रके एक मात्रामें मुखसे (एक) धमसे कहना

| | |
|--------|-------------|
| तार | |
| मध्य | सु रि गु म् |
| मन्द्र | |

(~) ' यह अणुदुत्तकी निशाणी है ' इसकी पाव मात्रा है इसवास्ते इसको (एक मात्राके चौधे दियेतक) ठहराना चाहिये परंतु हरएक मात्रापर हापग एक तागी देके मुखसे पहिने पाव मात्रापर (एक) आधे

मात्रापर [दो] पौनि मात्रापर (तीन) और पूरे मात्रापर (चार) ऐसे कहना चाहिये याने एक मात्रामें समदिसावसे (चार) भाग करना.

| | |
|--------|----------------------|
| तार | सु |
| मध्य | सु रि गु मु पु धु नि |
| मन्द्र | |

(८) ' ये अणुद्रुतकी निशाणी ' हे. इसकी आवपाव मात्रा है. इसवास्ते इसको एक अष्टमाश मात्रा (एक मात्राके आठ हिस्सेतक) टहरना चाहिये परंतु मात्रापर ताली देके मुग्गेम पहिली आवपाव मात्रापर (एक) पाव मात्रापर (दो) द्वैडपाव मात्रापर (३) अधि मात्रापर (४) वाइपाव मात्रापर (५) पौनि मात्रापर (६) साडेतान पाव मात्रापर (७) और पूरे मात्रापर (८) कहना चाहिये याने मिलके एक मात्रामें ठीक सम दिसावसे (८) भाग करना

| | |
|--------|----------------------|
| तार | सु |
| मध्य | सु रि गु मु पु धु नि |
| मन्द्र | |

(९) ' यह अणुअणुअणुद्रुतकी निशाणी ' हे. ये कमी गानेमें आती है इनको एक मात्रामें बराबर दिसावसे १६ गिनना.

| | | |
|--------|-------------------|----|
| तार | • • • • • | सु |
| मध्य | सु रि गु म प ध नि | ६१ |
| मन्द्र | ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ | |

अतस्रकी लयकारीका किस किस तरह उपयोग किया जाता है उसके कुछ उदाहरण आगे देते हैं ये जरूरी याद करना चाहिये.

| | | |
|--------|----------------------------|-----|
| तार | • • • • • | |
| मध्य | सु रि गु गु रि सु सु गु रि | |
| मन्द्र | - | ७१० |

| | | |
|--------|----------------------------------|-----|
| तार | • • • • • | |
| मध्य | सु रि गु रि गु रि सु रि गु सु रि | ७११ |
| मन्द्र | - | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | गु रि सु गु रि यु मु सु रि गु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|------|----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | पु धु सु रि गु रि सु सु गु रि सु |
| मध्य | |

स्वरके अथवा किसी व्यक्तीकी निशाणके ओर () पैगां लिख दिया हो तो उस लयकारीके देह गुणा समतना चाहेव

उदाहरण.

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु . रि गु . रि गु पु . गु रि सु . |
| मन्द्र | |

घतसजाति उच्चारणकी लयकारीके चिन्ह.

| नाम. | निशाणी. | गिनती. | मात्रा. |
|------------------------|---------|--------|---------|
| उच्चारण चतस्र | ५ | १ | १ |
| उच्चारण गुरु | ५ | १ | २ |
| उच्चारण लघु | ५ | १ | १ |
| उच्चारण द्वित | ५ | २ | १ |
| उच्चारण अणुद्वित | ५ | ४ | १ |
| उच्चारण अणुअणुद्वित | ५ | ८ | १ |
| उच्चारण अणुअणुअणुद्वित | ५ | १६ | १ |

उपरकी निशानियोंका उपयोग इस
रीतिसे किया जाता है.

इस लयकारीकी निशानियोंमेंसे कोई निशानी अगर स्वरके आगे दी जाये तो उस स्वरके नाचे जो लयकारीका निशाना होगी उमकी मात्रा और आगेकी निशानाकी मात्रा इन दोनोंको मिलाकर जितनी मात्रा हानी होगी उतनी देरतक उस स्वरका उच्चारण करना चाहिये.

| | |
|--------|---------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु ✕ रि । गु । मृ पु ध । नि । ५ |
| मन्द्र | |

| | |
|------|---------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु । नि । धुं धु । पु सु गु . ५ |
| मध्य | |

चतस्र जाति विभ्रान्तिकी लयकारीके चिन्ह.

| नाम. | निशाणी. | स्वर गिनती | मात्रा. |
|---------------------------|---------|------------|---------|
| चतस्र विभ्रान्ति | ४ | १ | ४ |
| गुरु विभ्रान्ति | ५ | १ | ५ |
| लघु विभ्रान्ति | ६ | १ | ६ |
| द्वुत विभ्रान्ति | ७ | २ | ७ |
| अणुद्वुत विभ्रान्ति | ८ | ४ | ८ |
| अणुअणुद्वुत विभ्रान्ति | ९ | ८ | ९ |
| अणुअणुअणुद्वुत विभ्रान्ति | १० | १६ | १० |

उपरके चिन्होंका उपयोग इस
रीतिसे किया जाता है.

इस लयकारीमें से कोई चिन्ह जिस जगह दिया जाये उस जगह उस
लयकारीका निम्ना समय होगा उतना ही देरतक चुप रहेना चाहिये.

उदाहरण.

| | |
|--------|------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सू७ रि१ १सू स७ ग७ रि५ सु रि५ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | गु १ मू' १ पु' सु' १ ५ रि' ५ गु ५ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------|
| तार | सृ रि ग |
| मध्य | सृ रि ग म प ध नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------|
| तार | गु रि सु सु |
| मध्य | नि ध प म ग |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | रि सु सु रि गु म पु धु नि |
| मन्द्र | |

तालकी जातियां.

तालकी जो चतस्र, तिस्र, मिस्र, खड और सर्कीण यह ५ जातिया है उनमेंसे सबसे मुगम चतस्रनाति है इसवास्ते उनको पहिले लिख दिया है अब तिस्रनाति लिखते है

तिस्रजातिकी लयकारीकी निशानी.

| नाम. | निशानी. | मात्रा. | गिनती. | एक गिनती की मात्रा. |
|----------------|---------|---------|--------|-------------------------------|
| तिस्रजाति गुरु | ४ | ४ | ३ | ३ १ |
| ” लघु | □ | २ | ३ | १ १ १ |
| ” मृत | ३ | २ | ३ | १ १ १ |
| ” अणुमृत | ३ | १ | ३ | १ १ १ |
| ” अणुअणुमृत | ३ | १ | १२ | १ १ १ १ १ १ १ १ |

उदाहरण.

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | स॒ रि॒ ग॒ रि॒ ग॒ म॒ स॒ रि॒ ग॒ ग॒ रि॒ स॒ |
| मन्द्र | |
| तार | स॒ |
| मध्य | स॒ रि॒ ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒ नि॒ ध॒ प॒ म॒ ग॒ रि॒ स॒ |
| मन्द्र | |
| तार | स॒ |
| मध्य | स॒ रि॒ ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒ नि॒ ध॒ प॒ म॒ ग॒ रि॒ स॒ |
| मन्द्र | |

चतस्रजाति उच्चारणकी निशानीया.

| नाम. | विशाणी. | भाभा. | गिनती. | एक गिनती को भाभा. |
|-------------------------|---------|-------|--------|----------------------|
| द्विजाति उच्चारणो गुरु. | ॐ | १ | ३ | ३ |
| ” ” लघु. | ॐ | २ | ३ | ३ |
| ” ” हुत. | ॐ | १ | ३ | ३ |
| ” ” अणुहुत. | ॐ | १ | ६ | ६ |
| ” ” अणुअणुहुत. | ॐ | १ | १२ | १२ |

तिसजाति विश्रान्तिकी निशानिया.

| नाम. | निशानि. | माना. | गिनती. | एक गिनती को भावा. |
|--------------------------|---------|-------|--------|----------------------|
| तिसजाति विश्रान्ति गुरु. | ४ | ४ | ३ | ३० |
| ” लघु. | ५ | २ | ३ | ३० |
| ” शुन. | ५ | २ | ३ | ३० |
| ” अणुशुन. | ५ | २ | ६ | ३० |
| ” अणुअणुशुन. | ५ | २ | १६ | ३० |

तिस्रजाति उच्चारण और विश्रान्तोके उदाहरणः -

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु रि षु रि सु रि ग षु रि सु रि षु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु रि षु सु षु रि सु षु ग प ध प |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------------------|
| तार | |
| मध्य | प ग रि सु रि ग प ध प ग षु सु |
| मन्द्र | |

हर एक तालमें 'ताली' 'खाली' और 'सम' होती है, इसका कारण यह है कि गाते समय इन तानों जगाओके स्वरोंपर या बोलोंपर प्रायः क्रमसे थोड़ा जोर दिया जाता है. तालीपर थोड़ा, उससे थोड़ा जादा खालीपर और उससे जादा समपर दिया जाता है. हर एक तालमें तीन किसमका लय होता है.

श्लोक-त्रयो लयास्तु विज्ञेयाः श्रुतमध्यविलंबिताः ॥

अमन रीतिमें लिखनेके वास्ते सम, ताली, खालीके चिन्हें नाचे लिखते है

| नाम | सम | ताली | खाली |
|-------|----|------|------|
| चिन्ह | १ | २ | ३ |

हर एक तालका अवर्त सतम होनेपर एक सडी लकीर दी जायेगी.

उदाहरण, चारताल.

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | स |
| मध्य | स रि ग म प ध नि नि ध्रु प म ग रि स |
| मन्द्र | |

२ १ ३ २ ३ २ २ २

अब राग किसको कहते है इसका थोड़ा व्यान करते है हमारे शास्त्र-कारोंका मत है कि '॥ रजयतीतिराग ॥' अथवा '॥ रजक स्वरसदृश सराग कथितो बुधे ॥' याने आनद करनेवाला जो नाद है अथवा जिन स्वरोंके आपसके मेलसे जो कानोंमें अत्यानंद होता है उसको राग कहिना चाहिये. ऐसे राग गानेमें अनेक आंत है. परंतु वे सब राग छे भेदके भदर आते है.

हर एक तालमें 'ताली' 'खाली' और 'सम' होती है, इसका कारण यह है कि गाने समग्र इन तीनों जगओंके स्वरोंपर या बोलोंपर प्रायः क्रमसे थोड़ा जोर दिया जाता है. तालीपर थोड़ा, उससे थोड़ा जादा, खालीपर और उससे जादा समपर दिया जाता है. हर एक तालमें तीन निसमका लय होता है.

श्लोक-त्रयो लयास्तु दिज्ञेयाः श्रुतमध्यचिलंधिताः ॥

अंगन रीतिमें लिखनेके वास्ते सम, ताली, खालीके चिन्ह नाचे लिखते हैं.

| नाम | सम | ताली | खाली |
|-----|----|------|------|
|-----|----|------|------|

| | | | |
|-------|---|---|---|
| चिन्ह | १ | २ | ३ |
|-------|---|---|---|

हर एक तालका अवर्त खतम होनेपर एक खड़ी लकीर दी जावेगी.

उदाहरण. चारताल.

| | | | |
|--------|-----------|-----------|-------------------|
| तार | <u>स</u> | | |
| मध्य | <u>स</u> | <u>रि</u> | <u>ग म प ध नि</u> |
| मन्द्र | <u>नि</u> | <u>धु</u> | <u>पु म गू रि</u> |

अब राग निसर्ग कहते हैं इसका थोड़ा व्यान करते हैं. हमारे कारणोंका मत है कि '॥ रंजयतीतिराग ॥' अथवा '॥ रजक स सराग. कथितो बुधै ॥' यानें आनद करनेवाला जो नाद है अ स्वरोंके आपसके मेलसे जो कानोंको अत्यानंद होता है उसको र चाहिये. ऐसे राग गानेमें अनेक आते हैं. परंतु वे सब राग अंदर आते हैं.

रागके छे किसम.

ओडव, पाडव, शुद्ध, संपूर्ण, छायालगत्व संकीर्ण.

जिस रागमें पाचहि स्वर आते हो, चाहे वह स्वर शुद्ध अथवा विकृत हो परंतु उस संख्याका नाम ओडव है.

जिसमें छे स्वर हो उसको पाडव कहिना चाहिये.

और जिसमें सात स्वर आते तो उसको संपूर्ण कहिना चाहिये.

जिस रागमें केवल शुद्धही स्वर आते हों उसको शुद्ध कहिना चाहिये.

जिस रागमें दूसरे रागके कुछ स्वर उसको और मनोहर बनानेके वास्ते लगाये जायें तो उसको छायालगत्व कहिना चाहिये.

संकीर्ण उसका नाम है कि जहा तीन चार किसमके राग रंग मिले हो और कानोंको अच्छे मालूम देते हो.

हमारे हिंदुस्थानी गानमें हर एक रागमें जरूर कविता आती है. और कवितामें प्रायः दो भाग हैं उनके नाम क्रमसे अस्थाई और अंतरा है. परन्तु किसी २ कवितामें अभोग करके एक तिसरा भेद होता है.

यह भेद गानमें इस क्रमसे आते है. पहिले अस्थाई फिर अंतरेके बाद अभोग जिस जगह अस्थाई खतम होगी वहा दो खड़ी लकीर होगी उनके मतलब ये होगा कि फिर एक बार अस्थाई कहिनी चाहिये. अंतरा जहा खतम होगा वहां तीन खड़ी लकीरें होगी उन लकीरोंकाभी यही मतलब होगा कि फिर पहिलेसे अस्थाई कही जाय अंतरेके माफिक अभोगकीभी खतनाही लकीरें होगी अंतमें हमेशा गायन समाप्त करते समय अस्थाई बहके करना चाहिये.

* यह चिन्ह जिस समय खड़ी लकीरपर दिया होगा उस समय फिर शुरूसे अस्थाई कहिनी. * यह चिन्ह जब लकीरपर होगा तब जितने अस्थाईके बोल लकीरके पहिले होंगे उनके आगे सब अस्थाई बहके फिर बहातक उन बोलोंको लके छोडना. * यह निशानी जब होवे तब वहीसे अंतरा कहिना * यह निशानी जब होगी तब लकीरवे. पहिलेतक जितने अंतरेके बोल आये होंगे उनके आगे अंतरेके बोल शुरू करके फिर बहीतक उसको लके छोडना चाहिये.

हमारी अद्भुत रीतिपर लिखे हुए राग.

इस तरह पढ़ने चाहिये की पहिले अङ्कित रागके उपर लिखी हुई सूचनाकी देखकर फिर स्वरोंको लयकारीमें पढ़ना उसके पश्चात् नीचे लिखी कावताओं उन स्वरोंके मुताबिक गाना चाहिये जब स्वरमें याद हो जाय, तब तालके साथ (जो कि कविताके नीचे लिखा होगा) गान अच्छा होगा

मूर्छनाका वर्णन.

क्रमात्स्वराणां सप्तनामारोहश्चावरोहणम् ।

अथवा.

मूर्छना याने मूर्छा याने पूरी बेहोशी नहीं अथवा पूरी हुशारी नहा ऐसा जा स्थिति उसको मूर्छना, कहते हैं

अब स्वरोंमें बेहोशी और हुशारीका तात्पर्य यह है की कोई स्वर कभी २ अपने पूरे स्थानपर न रहे, और कभी कभी स्थानपर आवे फिर धम या ज्यादा होवे परतु दूसरा स्वर उनमें न आवे और कानोंको अच्छा मालम देवे ऐसा जो स्वरका हिलना है उसको मूर्छना कहते हैं

बाजे बाजे गानेगले लोगोंकी आवाज ही बेसुरी होती है याने स्वरसे कम या ज्यादा होती है इसीको मूर्छना समझ लेना बड़ी भूल है वह मूर्छना नहीं कही जायगी, कारण मूर्छना वह है कि जो जुल रागोंमें दी जाती है और उसका मूल हेतु रागोंमें, देनेका यह है कि वह राग कानको ज्यादा मधूर मालम होवे

मूर्छनाकी निशानी इसतरह होगी (ॐ) और ऐसी निशानी जिस स्वरपर दी जावेगी उस स्वरपर मूर्छना है ऐसा जानना और उसी माफिक स्वरका उच्चारण करना

उदाहरण.

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सा रि ग प ^४ ष ^५ ग रि ^६ |
| मन्द्र | |

(ष) पर और (रि) पर जो निशाना दा है उगा मासिक गूँटनाकी निशानी स्वरपर दी जायगी.

अथ १ आर्थिक, २ गाथिक, ३ सामिक, ४ स्वरांतर, ५ ओडव, ६ पाठव और ७ सपूर्ण विमको कहते हैं उगका थोडासा वर्णन करते हैं.

(१) आर्थिक—उसको कहते हैं कि सातों स्वरोंमेंसे कोई एक स्वर होवे उदाहरण—सा.

(२) गाथिक—उगका नाम है कि सातों स्वरोंमेंसे कोई दो स्वर हों. उदाहरण—सा, रि.

(३) सामिक—उसको कहते हैं कि सातों स्वरोंमेंसे कोई तीन स्वर हों. उदाहरण—सा, रि, ग.

(४) स्वरांतर—उगका नाम है कि सातों स्वरोंमेंसे कोई चार स्वर हों. उदाहरण—सा, रि, ग, म.

(५) ओडव—उसका नाम है कि सातों स्वरोंमेंसे कोई पाँच हों. उदाहरण—सा, रि, ग, म, ष.

(६) पाठव—उसका नाम है कि सातों स्वरोंमेंसे कोई छ स्वर हों. उदाहरण—सा, रि, ग, म, ष, ध.

(७) संपूर्ण—शाने तिसमें सातों स्वर आवे सा, रि, ग, म, प, ध, नि.

इन सातों स्वरोंमें कौन कौनसे स्वर आपसमें मेल रखते है उसका वर्णन करते हैं

सा—से तो सब स्वर सबध रखते हैं—परतु उनमेंसे ज्यादा सबध आपसमें सा और प का है ऊसी माफिक म भी सा, के साथ सबध रखता है परतु पंचम जितना सा, से सबध रखता है, उससे कम म सबध रखता है

अब रे से ध सबध रखता है इससे थोडा कम पंचम रे से सबध रखता है

ग से निपाद सबध रखता है इससे कम गधारसे धैवत सबध रखता है म से पडज और निपाद सबध रखते है ऐसे सब स्वर आपसमें सबध रखते है

तात्पर्य—यह है कि हमेशा स्वरसे पांचवा और चौथा स्वर आपसमें सबध रखते हैं एक तो इसतरहका सबध आन कल्के गानेमें या वाद्य दिक मिलानेमें किया जाता है आर दूसरा यह प्रकार है उसके शास्त्रकारोंने चादी, संवादी अनुवादी, और विवादी ऐस चार भेद किये है, इनमेंसे चादी, संवादी, अनुवादी यह स्वर तो आपसमें सबध रखते हैं परतु विवादी विरुद्ध रहता है शास्त्रकार चादी मुरय स्वरको समझते है, संवादी बराबरका समझते है अनुवादी दोनोंको मदत करनेवाला है और विवादी तिनोंसे विरुद्ध रखता है—

उदाहरण.—(सा) का वादी (प) है और इन दोनोंका (ग) अनुवादी है इस वास्ते सा, ग, प, सा ऐसा कहा कहा जावेगा अगर इन स्वरोंमें (रे, म ध) अथवा नी इनमेंसे कोई स्वर लगाया जावेगा, तो इन स्वरोंके विवादीमें गिना जावेगा परतु कभी २ तार सप्तकके (सा) को इन स्वरोंके साथ नहीं लगाया जावेगा तो (नी) स्वर अनुवादीमें गिना जावेगा

नंबर १. १/२

| | |
|--------|---------------------------|
| तार | १ २ ३ ४ ५ |
| मध्य | स ५ रि स ङ रि स ५ ग स ङ ग |
| मन्द्र | — — — — — |

| | |
|--------|-----------------------------|
| तार | ६ ७ ८ ९ १० |
| मध्य | स ङ म स ङ म स प स ५ ध स ङ ध |
| मन्द्र | — — — — — |

| | |
|--------|-----------------------------|
| तार | स स स |
| मध्य | स ५ नि स ङ नि स ङ ङ नि ५ नि |
| मन्द्र | — — — |

| | | | | | | |
|--------|-----|-----|---|-----|-----|---|
| तार | स | स | स | स | स | स |
| मध्य | ० ध | ५ ध | प | △ म | ० म | |
| मन्द्र | | | | | | |

| | | | | | |
|--------|-----|-----|------|------|---|
| तार | स | स | स | स | |
| मध्य | ० ग | ५ ग | ० रि | ५ रि | स |
| मन्द्र | | | | | |

नंबर २.

| | | | | | | |
|--------|---|----|----|----|---|-------------|
| तार | | | | | | |
| मध्य | स | रि | ग | मस | प | रि ध ग नि म |
| मन्द्र | प | ध | नि | | | |

| | |
|--------|---------|
| तार | स |
| मध्य | पु सु ग |
| मन्द्र | |

— नंबर ३. —

| | | |
|--------|-----------|--------------|
| तार | सु | सु |
| मध्य | मु सुं पु | गु रि धुं नि |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|--------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सुं रि नि धु गु पु धु पु मु गु रि सु |
| मन्द्र | ॐ ॐ ॐ |

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु रि गु रि गु पं ५-५ पु . ध्रु पु |
| मन्द्र | नि षु नि |

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु गु रि सु सु रि नि ध्रु पु . |
| मन्द्र | नि षु नि |

| | |
|--------|---------------------------|
| तार | सु रि |
| मध्य | ध्रु पु सु गु रि सु सु रि |
| मन्द्र | नि षु नि |

| | | |
|--------|------------|------------|
| तार | गुरिसु . १ | सुरिसु . ५ |
| मध्य | धुनि | |
| मन्द्र | | |

नंबर ४.

| | | |
|--------|-------------------|------|
| तार | | |
| मध्य | पु . धुपुसुगुरिसु | सुरि |
| मन्द्र | निपुनि | |

| | | |
|--------|--------------|------|
| तार | | सुरि |
| मध्य | धुपुसुगुरिसु | सुरि |
| मन्द्र | निपुनि | |

| | |
|--|-------|
| तार । | ग्राह |
| सुख्य निपुञ्ज रि Δ म ष ध ङु सु षु षु मूञ्ज रि | |
| मन्द्र | रूप |

| | |
|--|-------|
| तार । | ग्राह |
| सुख्य निपुञ्ज रि Δ म ष ध ङु सु षु षु मूञ्ज रि | |
| मन्द्र | रूप |

| | |
|--|-------|
| तार । | ग्राह |
| सुख्य निपुञ्ज रि Δ म ष ध ङु सु षु षु मूञ्ज रि | |
| मन्द्र | रूप |

तार

मध्य

सु गुरु सु

सु रि गु रि गु पु

मन्द्र

नि पु नि

तार

मध्य

सु रि सु ५ १ पु धु पु गु पु गु रि गु रि

मन्द्र

तार

सु

मध्य

सु रि सु सु रि गु पु सु

सु

मन्द्र

नंबर ६.

इसमें सब स्वर अतिभोमल दूसरे स्वर निम जग आवेगे उस जग
उसकी निशानी होगी.

| | |
|--------|--------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | रि रि रि रि रि रि ग रि ग रि ग रि सु |
| मन्द्र | |
| तार | |
| मध्य | रि सु रि सु ऋ रि रि रि रि रि रि ग रि |
| मन्द्र | |
| तार | |
| मध्य | ग रि ग रि सु रि सु रि सु ऋ सु १ १ |
| मन्द्र | |

तार

मध्य धु पु म गु रि सु रि ११ गु रि रि गु ङ

मन्द्र

तार

मध्य सु धु धु धु धु प ध प म प म गु म गु

मन्द्र

तार

मध्य रि ग रि रि ग रि सु सु सु १ रि रि रि

मन्द्र

| | |
|--------|-----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | रि रि रि ग रि ग रि ग रि स रि स रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु ऋ रि रि रि रि रि रि ग रि ग रि ग |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------------------|
| तार | सु रि सु |
| मध्य | रि सु रि सु रि सु ऋ नि धु ने |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------------------|
| तार | स॒ रि॒ स॒ ङ |
| मध्य | प॒ ध॒ प॒ म॒ ग॒ म॒ प॒ ध॒ प॒ ङ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------------|
| तार | रि॒ स॒ |
| मध्य | नि॒ ध॒ प॒ म॒ ग॒ रि॒ स॒ सु॒ ङ॒ म॒ म॒ |
| मन्द्र | नि॒ |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | स॒ रि॒ स॒ |
| मध्य | रि॒ ग॒ म॒ ग॒ म॒ ग॒ रि॒ स॒ नि॒ ध॒ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | प म ग रि रि स रि रि रि रि रि रि ग रि |
| मन्द्र | नि |

| | |
|--------|-----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | ग रि ग रि-स रि स रि स रि रि रि रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | रि रि रि ग रि ग रि ग रि स रि स रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------|
| तार | सु सु सु |
| मध्य | सु सु सु रि रि रि पु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------|
| तार | सु रि गु सु सु |
| मध्य | पु सु सु पु सु |
| मन्द्र | धु नि पु |

| | |
|--------|-------|
| तार | सु सु |
| मध्य | धु |
| मन्द्र | |

११ हुं पित—उसका नाम है, जिन स्वरोंकी हुंकार हृदयओमें होवे।

१२ मुद्रित—उसका नाम है कि मुँहे मुँदके जो स्वरोंकी आवाज निकले।

१३ नाभित—उसका नाम है कि हरएक स्वरको नीचे दाब देना याने प्रत्येक स्वर नीचे झुंझाना।

१४ मिश्रित—उसका नाम है कि पाँछे जो तेरह तरहकी गमक लिखी है उनमेंसे कोई किममकी दो या अधिक गमकोंका मेल यानि समावेश होवे।

१५ कुरूल—उसका नाम है कि कुछ थोडे या बहुत स्वरोंको एकदम ऊपर ले जाना और जो अक्षरका स्वर आवे उसपर जोरसे धक्का देना अथवा ऊपरसे नीचे स्वरोंको लाते समय जो अक्षरका स्वर आवे उसको जोरसे धक्का देना।

गमकों के चिन्ह.

गद्गदितगमक, (—) इस किसमकी लकीर जिन स्वरोंपर आवेगी उन स्वरोंको गद्गदितगमक कि आवाज निकालना चाहिये।

मुद्रित, (==) ऐसी दो लकीरें जिन स्वरों पर आवेगी उन स्वरोंको बारीक आवाज करके और मुख को थोडा खोलके गाना चाहिये।

मुर्छना, (^o) इस प्रकार की निशानी जिन स्वरोंपर आवेगी उन स्वरोंको धक्का देके आवाज निकालना चाहिये।

झावित, (१-२) एक से दो गिनती तक बीच के स्वरोंपर, झावित गमक (मेंड) लेना चाहिये याने स्वरको विना तोडेभेन्ड निकालना चाहिये।

(•) जिन स्वरोंपर (सी) ऐसा चिन्ह होगा उन स्वरोंको बड़ी बड़ी आवाज के साथ कठ खोलके गाना (धं) इसी प्रकार से (•) ऐसी निशानी जिन स्वरों पर आवेगी उन स्वरोंको बारीक आवाज से यानि बँठ दबा के गाना चाहिये।

(> <) जिन स्वरोंपर इन चिन्हों में से कोई भी आवे तो जैसे चिन्ह का आकार है उस के माफक छोटा बड़ा आवाज करना चाहिये।

आघात, (*) ऐसा चिन्ह जिन स्वरोंपर होगा उन स्वरोंको धक्के के साथ याने झटके के साथ गमक निकालके यानि आघात को आघात करना चाहिये।

अन्धोलित (~) जिन स्वरों पर ऐसी चिन्ह आवेगा उन स्वरों को आन्धोलित स्वरों के माफक आवाज निकालना।

संगीत शिक्षणकी क्रमिक पुस्तके.

इस विद्यालय में पं० विष्णु दिगंबरजीने संगीत
आज तक जो किताब तयार किई उनके नाम और किंमत.

| | भाग | रु. | आ. |
|---------------------------------|------|-----|----|
| महिष्ठा संगीत हिंदी. | १-२ | ० | ६ |
| संगीत तत्त्वदर्शक. | १ | ० | ८ |
| अंकित अलंकार. | १ | ० | ८ |
| हारमोनियमप्रकाश हिंदी और उर्दू. | १-३ | २ | ४ |
| " केवल हिंदीमें | १-४ | १ | ४ |
| संगीत बालबोध हिंदी और उर्दू. | १ | १ | ८ |
| " " द्वितीय भाग. | २ | १ | ० |
| स्वल्पालाप गायन. | १-३ | ३ | १२ |
| राग प्रवेश. | १-१३ | ११ | ० |
| व्यायामके साथ संगीत. | १-२ | १ | ० |
| संगीत प्रथम भाग हिंदी. | | २ | ० |
| " द्वितीय. | | ३ | ० |
| राग भरव. | | २ | ० |
| राग मालकंस. | | २ | ० |
| राग भूवाजी. | | २ | ० |
| सूदंग और तबलेकी पुस्तक. | | १ | १ |
| सन्तारकी पुस्तक. | १-२ | ३ | ० |
| नारदीय शिक्षा भाषा टीका समेत. | | १ | ० |
| भजनामृत लहरी. | १-२ | २ | ८ |
| राम नामावली. | | ० | २ |

इसके सिवाय श्रीयुत मुकधनकर कृप पचावलिया मिलेंगी.

मनेजर

गांधर्व महा विद्यालय.

॥ प्रागुद्य प्रसङ्ग ॥

मन] ❀ गांधर्व महा विद्यालय. ❀ [१९२०.

महिला संगीत.

(प्रथम भाग.)

समाप्त, उद्देश्य, विषय
श्री गणेशाय नमः
संस्कृत, मसूर, एक शिवा मुक्ति, विविधान
गांधर्व महा विद्यालय संवत् द्वारा रचित

श्री गणेशाय

प्रति १०००

मूल्य २००

१९२०

प्रस्तावना।

४

यह महिला संगीत पुस्तक बनाने का मुख्य उद्देश यह है कि कन्याओं में संगीत विद्या का प्रचार सुलभतासे हो. तथा घर घर में ईश्वर गुणानुवाद गायन के साथ गाने लग जाय. और वह गायन विद्या आसानी से कन्याओं को प्राप्त हो जावे. इस पुस्तक में केवल प्राथमिक जो गायन विद्या सिखने का क्रम होता है. वह सुलभता से लेखन पद्धती के अनुसार लिखा गया. इस पुस्तक के सिखने से गायन विद्या की क्रम क्रम से उच्च श्रेणी लिखनेके लिये आसानी होगी. खास कन्याओं के शिक्षण के लिये यह पुस्तक बहुतही उपयोगी होगा. इस किसम का पुस्तक बनाने के कार्य में मेरे मित्र लाला देवराजजी प्रेसिडेंट कन्या महा विद्यालय जालंधर ने कन्या तथा गियों के उपयुक्त गीत दिये इस लिये मैं उनका बहुत बहुत धन्यवाद मानता हूं अब सब सज्जनों से निवेदन है की यह अपनी कन्याओं को इस महिला संगीत पुस्तक से गान विद्या का शिक्षण देंगे. जिससे उन के गृह की शोभा बढ़ जाय.

भवदीय,

पं. चिष्णुदिगंबर.

महिला संगीत.

भाग १ ला.

पाठ १ ला.

प्रश्न—गायन सीखने से क्या लाभ होता है?

उत्तर—गायन सीखने से ४ प्रकार के लाभ होने हैं.

प्रश्न—वह कौनसे?

उत्तर—मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा धार्मिक.

प्रश्न—मानसिक फायदा कौनसा है?

उत्तर—गायन करने में मन प्रसन्न हो जाता है तथा मन में शुभ विचार आ कर मन शुद्ध रहता है और हृण्णक काम करने के लिये मनका उत्साह बढ़ जाता है तथा मन में शांती आती है और मन को जो किमी निम्न का दुःख प्राप्त हो तो वह गायन के द्वारा सुरतही नष्ट हो जाता है इस प्रकार के अनेक गुण गायन में हैं जो की मन को फायदा करने वाले हैं.

प्रश्न—शारीरिक फायदा कौनसा?

उत्तर—गायन करने से शरीर में वायू शुद्ध होता है कारण प्राणायाम करने से जैसा वायू शुद्ध रहता है वैसे गाने से छाती की विमारी होती नहीं और कफादिक रोग हट जाते हैं और छाती तथा फुफूस मजबूत हो जाते हैं. मस्तक में शांति प्राप्त होने से रात को निद्रा ठीक आती है; तथा शरीर में हर एक काम करने के लिये रक्तुर्ता रहती है.

प्रश्न—सामाजिक फायदे कौन से?

उत्तर—बड़े बड़े महात्मा सत साधू-ऋषियों के बनाये हुये सदुपदेश वाले भजन कविता श्लोक गाने से सुनने वाले पर उस के अर्थ का परिणाम हो के वह अच्छे आचरणोंको करने लगते हैं इसी प्रकार धार्मिक उपदेशके गीत गाने से धर्म पर भक्ती हो कर उसी मार्ग में चलने के वास्ते प्रयत्न होता है.

पाठ २ रा.

प्रश्न—गायन सीखने के लिये पहिले क्या सीखना चाहिये?

उत्तर—स्वर सीखना चाहिये.

प्रश्न—स्वर कितने हैं?

उ०--स्वर सात है.

प्र०--वह कौनसे?

उ०--पङ्क, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद.

प्र०--गाते समय इन स्वरों का उच्चार किस प्रकार से किया जाता है?

उ०--स, रि, ग, म, प, ध, नि.

प्र०--सात स्वर के समूह का क्या नाम है?

उ०--सप्तक.

प्र०--सप्तक कितने होते हैं?

उ०--तीन.

प्र०--तीन सप्तकों का नाम क्या?

उ०--मन्द्र, मध्य, तार.

प्र०--मन्द्र सप्तक किस को कहते हैं?

उ०--हृदय में जिन स्वरों का उच्चारण करते समय अधिक जोर
रगता है तथा जिन स्वरों से हृदय अधिक गूँज निकले
वह मन्द्र सप्तक.

प्र०—मध्य सप्तक कौनसा?

उ०—जिन स्वरों का उच्चारण करते समय कंठ में अधिक जोर लगे वह मध्य सप्तक है.

प्र०—तार सप्तक किस को कहते है?

उ०—जिन स्वरों का जोर तालु स्थान में लगता है वह तार सप्तक है.

प्र०—सात स्वर जो है उन के उच्चारण अलग अलग किस वास्ते किये गये है?

उ०—उन के सात आवाज अलग २ किमम के है.

प्र०—सात आवाज है वह किस प्रकारसे अलग अलग होते है?

उ०—सा की आवाज से रे की आवाज उची है, और रे की आवाज से ग की आवाज उंची है, इसी प्रकारसे ग से म, म से प, प से ध, ध से नि.इस प्रकारसे एक से एक उचे तथा अलग अलग सात आवाज होने के कारण वह सात स्वर अगल समजे गये है.

प्र०—स्वर को ऊचा चढाना, तथा नीचे उतारना इस को क्या कहते है?

उ०—आवाज ऊचा ले जाने को आरोह कहते है आंग निचे उतारने को अवरोह कहते है.

प्र०—मन्द्र, मध्य और तार इन सप्तको मे क्या फरक है'

उ०—मन्द्र सप्तक से मध्य सप्तक ऊचा है, और मध्य से तार सप्तक ऊचा है. यही फरक इन सप्तकों में है.

पाठ ३ रा.

प्र० सप्तक को लेखनपद्धती में किस प्रकार में लिखना चाहिये

उ०—पहिले चार लकीरे आडी रेंच कर फिर चाई तरफ दो सटी लकीर खेचनी जिस से तीन गाने बन जायेंगे पहिले सांन में मन्द्र दुसरे खाने में मध्य आंग तिसरे गाने में तार करके लिखना उसका उदाहरण जोग के माफक —

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | |
| मन्द्र | |

प्र०—तीन सप्तकों में मे निम्नी सप्तक में यदि गा, रि, ग म

प, ध, नि यह 'त्र' लिखने होंगे तो किस प्रकार से लिखे जायें?
 उ०—जिस सप्तक के स्वर होंगे वह उसी खाने में लिखने चाहिये.

प्र०—उदाहरण लिखलाओ?

उ०—

| | |
|--------|--------|
| तार | स |
| मध्य | स रि ग |
| मन्द्र | नि |

पाठ ४ था.

प्र०—स्वर नापने के वास्ते क्या साधन है?

उ०—ताल.

प्र०—ताल किसको कहते हैं?

उ०—वरत या समय गिनने के वास्ते जो हाथ से ताली बजा जाती है, उसको ताल कहते हैं.

प्र०—ताल की गती को क्या कहते हैं?

उ०—लय कहते हैं.

प्र०—लय कितनी किमम की है?

उ०—तीन किमम की.

प्र०—लय के जो तीन प्रकार हैं उन का नाम क्या?

उ०—विलम्बित, मध्य, द्रुत.

प्र०—विलम्बित, मध्य, द्रुत किसको कहना चाहिये?

उ०—विलम्बित याने बहुत धीमी लय याने धीरे चलने वाली लय,
मध्य याने विलम्बितसे दुगुणी चलने वाली, और मध्य से
दुगुण में चलने वाली लय को द्रुत लय कहते हैं

प्र०—किस मापक जावाज नापने के लिये मान स्वर है उस
मापक लय को नापने के चाम्ते क्या मापन है?

उ०—लय नापने के चाम्ते मात्रा है

प्र०—एक मात्रा की लयकागी कितनी होती है?

उ०—एक सेकंड के बराबर.

प्र०—तालाते नेर कितने हैं?

उ०-सात.

प्र०-वह कौनसे?

उ०-चतस्र, गुरु, लघु, द्रुत, अणुद्रुत. अणुअणुद्रुत, और अणुअणुअणुद्रुत.

प्र०-इन भेदों की मात्रा बतलाओ?

उ०-चतस्र की चार मात्रा, गुरु की दो मात्रा, लघु की एक मात्रा, द्रुत की आधी मात्रा, अणुद्रुत की पाव मात्रा. अणुअणुद्रुत की आधपाव मात्रा, अणुअणुअणुद्रुत की पावमात्रा श्री पावमात्रा याने एक मात्रा को सोलवा हिस्सा.

पाठ ५ वा.

प्र०- मात्राओं के भेदों को लेखन में किस प्रकार लिखा जायेगा वह लिख के बतलाओ?

उ०-चतस्र, गुरु, लघु, द्रुत, अणुद्रुत, अणुअणुद्रुत, अणुअणुअणुद्रुत.

× ~ — ० ७ ७ ७

प्र०- इन चिन्हों का उपयोग सप्त स्वरों में किस रीति से किया जाता है, इस का लेखन में उदाहरण बतलाओ?

उ०- स्र रि ग नु पु धु नि

पाठ ६ वा.

अध्यापकों के लिये सूचना—निम्न लिखित स्वर विद्यार्थी को आवाज से जब तक ठीक न निकले तब तक मिंगलाना चाहिये और जब वह स्वर ठीक बैठ जायेंगे तब उनही स्वरोंको अ, आ, इ, उ, इ अकार, इकार आवाज से निकालने के वास्ते प्रयत्न करना चाहिये क्योंकि यह आवाज में तैयार होने में किसी गीत पर तान आलाप सीगलाने के वास्ते इस का बहुत उपयोग होगा, इस बातपर ध्यान दे के मिंगलाना चाहिये

नंबर १.

| | |
|--------|---------------|
| तार | |
| मध्य | स म म स म स स |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | |
| मध्य | स रि, रि स, म रि रि, रि रि म. |
| मन्द्र | |

शि० सू०—उपर के दीये हुये स्वर जन विद्यार्थी को हो जायेंगे तब आगे लिखा हुआ प्रश्न पढ़ना

प्र०—“सा” का आवाज निकालो?

शि० सू०—विद्यार्थी “सा” स्वर का उच्चार करेगा उस वक्त इस बात का विचार करना चाहिये कि उसका स्वर ठीक लगा या न लगा यदि उस में कुछ उथी (रामी) होय तो बतलानी चाहिये

प्र०—“रे” स्वर कहो?

शि० सू०—सा और रे स्वर बहुत बरतत पूछ कर फिर निम्न लिखित स्वर सिखलाने चाहिये

| | |
|--------|-------------------------|
| सार | |
| मध्य | स रि ग, स रि ग, स ग रि, |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------|
| तार | |
| मध्य | रि स ग, रि ग स, ग स रि, |
| मन्द्र | |

शि०सू०- उपर के लिये हुये म्बर विद्याधिया को प्रथम २ रीति म पठना

पाठ ७ वां.

प्र०-चतस्र की मात्रा कितनी?

उ०-चार.

प्र०-चतस्र म्बर के दिसलाओ?

उ०-दाय से चार वस्तुत ताली बना म्बर पहिले ताली से 'र' अक्षर शुद्ध कर के चौथी ताली पर 'र' कतिना मिल के चार ताली के अदर एक को बोलना

प्र०-चतस्र की लयमारी को म्बर के माथ उपयोग कर के दिसलाओ?

उदा०—सु रि गु इन में से कोई भी स्वर हाथ से ताल दे कर गा के सुनाओ.

प्र०—गुरु की मात्रा कितनी?

उ०—दो.

प्र०—गुरु की लयकारी में सारेग में से कोई एखादा स्वर गा कर सुनाओ?

प्र०—लघु की मात्रा कितनी?

उ०—एक.

प्र०—लघु की लयकारी में सारेग यह स्वर गा के सुनाओ?

शि०सू०—ऊपर कही हुई चतस्र, गुरु, लघु यह जब विद्यार्थियों को टीक समझ में आ जायें तब आगे के स्वर सिखलाने चाहिये.

| | | |
|--------|-------------------|----------------------|
| तार | | |
| मध्य | सु रि गु म् रि सु | रि ग ग स रि रि गु सु |
| मन्द्र | | |

पाठ ८ वा.

आगे के स्वर मिलाने.

| | |
|--------|----------------------------|
| तार | |
| मध्य | म रि ग म न ग रि म न म रि न |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------|
| तार | |
| मध्य | न रि म ग न ग म रि न म ग रि |
| मन्द्र | |

शि०गु० उत्तर के स्वर विचारिए। ॥ शीर्षक स्वरा में पाठ ही मंत्र -
इसी स्वरों के मंत्र अलग-अलग स्वर द्वारा जायें।

पाठ ९ वां.

| | |
|--------|------------------------------|
| तार | |
| मध्य | स रि ग म प स रि ग प म स रि म |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | |
| मध्य | ग स रि म ग प स रि प म ग स रि प |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | |
| मध्य | म स रि ग म प ध स रि ग म ध प स |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------------|
| तार | |
| मध्य | ग ध प म स रि ग ध म प स रि ग प ध |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | म न रि ग प म ध स रि ग म प ध नि ध |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------------|
| तार | म |
| मध्य | प म ग रि स म रि ग म प ध नि नि ध |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------|
| तार | |
| मध्य | प म ग रि स |
| मन्द्र | |

पाठ १० वां.

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | सु रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | स |
| मध्य | सु स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | सु सु रि गु म पु धु नि नि धु पु सु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------|
| तार | |
| मध्य | रि सु |
| मन्द्र | |



रि सु

स की

त्रि०सू० उपर जो दिये हुए स्वर हैं उन मात स्वरों में से अलग अलग स्वर विद्यार्थियों को आवाज से लगाने को कहना और तत्पश्चात् आगे के गायन के पाठ मिलायाना.

नंबर १.

| | |
|---------------------------------------|---------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | पु सु पु गु गु . ५ रि गु गु सु रि . ५ |
| मन्द्र | नि |
| प्या रा . प्या रा ः ई श्व र प्या रा आ | |

| | | | |
|---------------------------------|----------|--------------|----------|
| तार | | | |
| मध्य | सु | सु रि सु . ५ | सु सु सु |
| मन्द्र | नि धु नि | नि | |
| म अ, लू चा दे ने हा रा गा य भैं | | | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | मु गु म्-पु षु पु पु पु . ५ पु धु धु धु पु |
| मन्द्र | |

स और में टें व करी उ सका है य

| | |
|--------|-----------------------------|
| तार | |
| मध्य | धु गु धु पु मु गु रि सु . ५ |
| मन्द्र | |

ह वि म्ता . रा . . .

नंबर २-

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु गु गु सु गु गु सु गु गु पु . ५ पु धु |
| मन्द्र | |

गो १ द २ में ३ ई २ श्व ३ र २ ह २ में १ वि २ टा १ स १ ची १

| | | |
|--------|--------------------|----------|
| तार | सु | सु सु |
| मध्य | पु पु धु पु गु . ५ | पु पु धु |
| मन्द्र | | |

पु त्री ह में व ना प्रे म हि से ह
२ ३ २ १ २

| | | |
|--------|--------------------|-------------------|
| तार | | |
| मध्य | धु सु पु सु गु . ५ | गु सु पु धु नि रि |
| मन्द्र | | |

म र हे स दा दौ डे कू दे मं ग
३ २ १ २ ३

| | | |
|--------|-----------|----------------------|
| तार | | सु |
| मध्य | रि सु . ५ | सु गु गु पु पु नि धु |
| मन्द्र | | |

ल गा १ २ ३ २
२

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | प धु पु मु उ ङ सु सृ सु . ५ |
| मन्द्र | |
| | १ २ ३ ४ |

यह फकत (सारिगम) गाना.

इस के आगे (फल और फूल) यह बोल है यह (गोद-
मे ईश्वर) जैसा है वैसा गाना. और आगे जो सारिगम
(मागमप) लिखी है वट गाना.

फल और फूल को तेरे भोग,
दूध दही खा रहें निरोग ।
पशू हमारे रहें सहमेल,
फलें हमारे पांशे बेल ॥
रत्न मिलकर सब कन्यायें,
गति ईश के नित गाय ॥

| | |
|--------|---------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | पु म् गु स रि गु रि सु . ५ सु |
| मन्द्र | नि |
| | हरि स मा न दा . ता ज ग १ ३ २ ३ २ २ |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | रि गु रि गु म् पु पु ५ नि धु पु म् गु . ५ |
| मन्द्र | |
| | मे . दु स रा . न को . ई . . १ ३ २ ३ २ २ |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | रि रि म् म् पु पु पु पु रि म् म् पु पु धु |
| मन्द्र | |
| | सा धु और अ सा धु पा ले बो ध अ बो ध ले १ ३ २ ३ २ २ १ ३ २ ३ २ |

| | | |
|--------|----------|-------------|
| तार | | स सु स सु |
| मध्य | मृ गृ रि | नि णि नि णि |
| मन्द्र | | |

इ . . रा व पा ले र क पा ले
२ १ ३ २ ३ २ २

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | ५ नि धु पु गृ रि . मृ पु पु नि . ५ |
| मन्द्र | |

ज ग त मे है . जो . ई .
१ ३ २ ३ २ २

इस भजन के और जो अतरे है वह उपर के
अतरे के माफक गाना

जीव पाले जन्तु पाले, कीट कृमि होई ।

जड जैतन्य सब को पाले, पाप सन के धोई ॥ २ ॥

दुराचार दुष्ट लम्पट, धर्म लाज खोई ।

तिस की दात भोगे निशदिन, खाँये पहिरे सोई ॥ ४ ॥

प्रीति जिस की दम के जग में बेल पुष्प गोई ।

धन्य ऊची तिस को दाया, शरण उस की लोई ॥ ६ ॥

नंबर ४ लोअर प्रायमेरी ५ श्रेणी.

| | |
|--------------------------------|--|
| तार | |
| मध्य | सु सु . सु गु सु रि गु मु पु . ५ धु धु |
| मन्द्र | . |
| गु ण गा वे गी ई . श्व र के फ ल | |

| | |
|---------------------------------|---------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | पु धु मु पु गु मु रि गु सु रि सु . पु |
| मन्द्र | नि |
| पा . वे . गी . ई . श्व र से . ई | |

| | |
|--------------------------------|--------------------------|
| तार | सु सु सु सु |
| मध्य | नि धु पु धु नि . ५ नि धु |
| मन्द्र | |
| श्व र अ म्मा है स व की म हि मा | |

तार

॥

मध्य

नि पु धु मु पु गु मु रि गु सु . ५

सु गु

मन्द्र

. उ न की . व हु त व डी

स्वा दु

तार

सु

सु . ५ सु

मध्य

पु धु नि धु नि

नि धु पु मु

मन्द्र

म्या दु भो . ज न दे

ई . श व ढा

तार

रि सु . ५

मध्य

गु रि गु पु धु नि

सु गु गु

मन्द्र

. ता . सु ख स व के

ई श ति

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु सु गु गु गु रि गु म् . ५ गु पु सु पु |
| मन्द्र | |

र च ता ज ल औ र आग खेत म व

| | | |
|--------|--------------------------------------|----|
| तार | | सु |
| मध्य | पु पु गु धु पु धु . ५ पु धु नि नि नि | |
| मन्द्र | | |

ही उ गा ता . साग प्यार क रू मै स

| | | |
|--------|----------|------------------------|
| तार | | सु . ५ गु गु रि सु . ५ |
| मध्य | नि धु नि | |
| मन्द्र | | |

व से . ही य हि आ शा

| | | | | | |
|----|---|---|----|----|--------|
| सू | | | | | सू . ५ |
| सू | प | प | धु | नि | |
| सू | | | | | |

१ . २ ३ ४ ५

नं. ५

| | | | | | |
|----|----|---|---|----|------------|
| सू | | | | | |
| सू | म | म | म | म | सू . ५ |
| सू | नि | | | नि | रि रि रि न |

१ . २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

| | | | | | |
|----|----|---|---|---|-----------|
| सू | | | | | |
| सू | नि | म | प | प | प |
| सू | | | | | म नि रि न |

| | | | |
|--------|-----------|-------------|-------------|
| तार | | | |
| मध्य | सृ षु . ५ | गृ षु षु षु | सृ षु सृ गृ |
| मन्द्र | | | |

. . स च्ची दा सी अ प नी .
२ ३ २ २ ३ २

| | | |
|--------|----------|---------------------------|
| तार | | |
| मध्य | रि रि गृ | गृ सृ धु षु . गृ सृ गृ रि |
| मन्द्र | | |

. प्र सु की . जी . ये . ह री
२ ३ २ २

| | | |
|--------|-------|------|
| तार | | |
| मध्य | सृ रि | सृ . |
| मन्द्र | नि | नि |

की . जी ये .
३ २ २

इस भजन के और जो अंतरे हैं वह उपर के
अंतरे के माफक गाना.

खाना पीना हमको तुम, प्रभु देते हो, हरि देते हो ।
मोल हमसे कुछ नहीं, प्रभु लेते हो, हरि लेते हो ॥ २ ॥
फूल फले हम पाती हैं, प्रभु आप से, हरि आपसे ।
दुख टल सब जाति हैं, प्रभु जाप से, हरि जाप से ॥ ३ ॥
माता सम हमें गोद में, प्रभु लीजिये, हरि लीजिये ।
प्यार हम को अपना, प्रभु दीजिये, हरि दीजिये ॥ ४ ॥

—ॐ { समाप्त. } ॐ—

संगीत शिक्षणकी शकिक पुस्तके.

इस विद्यालय में पं० विष्णु दिगंबरजीने संगीत विद्यापर

आज तक जों कितान तयार किइ उनके नाम और किंमत,

| | भाग | रु | आ |
|----------------------------------|-----|----|----|
| महिला संगीत हिंदी. | १२ | ० | ६ |
| संगीत तत्वदर्शन | १ | ० | ८ |
| अभिने अष्टाहार. | १ | ० | ८ |
| हारमोनियमप्रज्ञान हिंदी और उर्दू | १३ | २ | ४ |
| " " द्वैतल सिंगिंग | १० | १ | ४ |
| संगीत बालशोध हिंदी और उर्दू | १ | १ | ८ |
| " " द्वितीय भाग | ० | १ | ० |
| स्वल्पाष्टाप गायन | १३ | ३ | १२ |
| राग पर्यटन | ११३ | ११ | ० |
| व्यायोगके साथ संगीत. | १२ | १ | ० |
| संगीत प्रथम भाग हिंदी | | २ | ० |
| " द्वितीय | | ३ | ० |
| राग भैरव | | ० | ८ |
| राग मालवक | | २ | ० |
| राग नृपादी | | २ | ० |
| भजन और तयारी पुस्तक | | १ | ० |
| संगीतकी पुस्तक | १० | ६ | ० |
| भारतीय शिक्षा भाषा विद्या समेत | | १ | ० |
| नानामृत लहरा | १५ | ० | ८ |
| राग न माव गी | | ० | - |

इसमें विद्यापीठ अधिपति मुखयनकर कृपा परकावटिदुता सिंघिया

मैनेजर

१० मरी विद्यालय.

॥ श्रीगुरु दत्त प्रसन्न ॥

महिला संगीत,

द्वितीय भाग.

मुद्रक और प्रकाशक

श्रीमान् पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर.

गायनाचार्य, मास्टर ऑफ इंडियन म्युसिक, डायरेक्टर.

गोधर्व महा विद्यालय-बंबई द्वारा रचित

सन १९१६.

इस पुस्तकके छापनेका सब अधिकार पुस्तक वर्गाने
आपने स्वाधीन रखा है.

प्रथमावृत्ति प्रती १००० मुख्य ४ आना.

“गोधर्व महा विद्यालय,, प्रेत स्ट्रिट रोड-बंबई.”

प्रस्तावना।

यह महिला संगीत पुस्तक बनाने का मुख्य उद्देश यह है की, कन्याओं में संगीत विद्या का प्रचार सुरुभतासे हो. तथा घर घर में ईश्वर गुण, नुसार गायन के साथ गाने लग जाय. और वह गायन विद्या आसानी में कन्याओं को प्राप्त हो जावे. इस पुस्तक में केवल प्राथमिक जो गायन विद्या सिखने का क्रम होता है. वह सुलभता से लेखन पद्धती के अनुसार लिखा गया. इस पुस्तक के सिखने से गायन विद्या की क्रम क्रम से उच्च श्रेणी सिखनेके लिये आसानी होगी. इस कन्याओंके शिक्षण के लिये यह पुस्तक बहोतही उपयोगी होगा. इस किसम का पुस्तक बनाने के कार्य में मेरे मित्र लाला देवराजजी प्रेसिडेंट कन्या महा विद्यालय जाठधर में कन्या तथा स्त्रियों के उपयुक्त गीत दिये इस लिये मैं उनका बहोत बहोत धन्यवाद मानता हूं अब सन सज्जनों से निवेदन है की वह अपनी कन्याओं को इस महिला संगीत पुस्तक से गान विद्या का शिक्षण देंगे जिससे उन के गृह की शोभा बढ जाय.

भवदिय,

पं. विष्णु दिगंबर.

महिला संगीत.

भाग २ रा.

पाठ. १. ला.

प्र०-आर् मात्राका नाम क्या ?

उत्तर-द्वुत.

प्र०-द्वुत का चिन्ह कैसा होता है, लीनके वनचार ?

उत्तर-(०) इस प्रकार होता है.

प्र०-द्वुत के लयकारी को कैसा गिनना ?

उत्तर-हातमे एक ताली देके मुखमे एक दो पैसा कहना, इस हिस्सामे ताली के साथ एक कहा जाय और हात उठाने समय दो कहा जाय, निसे हिस्सा ठीक होजाय.

शि०मु०-त्रिधाधियोंके इस द्वुत लयका जान होने के बाम्ने बहोन वगत शि०कीने खुद् ताल देने, उनके मुखसे एक दोका उच्चारण करना चि०. द्वुत लयकारी तयार होनेके बाद नीचेके उदाहरण त्रिधाधियोंसे करालेने.

उदाहरण १.

उदाहरण २.

- ~ - ~ -

उदाहरण ३.

- - - - -

उदाहरण ४.

o o o o o

उदाहरण ५.

- ~ x ~ - o o o o

उदाहरण ६.

o o o o - o o ~ o o o o x

नि० मु०-उपर के उदाहरण टीक रीतिसे कहेने
 जानेके बाद निचेके छे म्यरोंके सारिगम बिना लपकारी के सिप
 मध्य गतक में गिखाना.

पाठ २ रा.

सारिगम पध, पध गग रिमा.

नि० मु०-यह उपर की सारिगम बहोनेके समय
 दगा, और दो दह होने के बाद आगे की सारिगम गिखाने

(१) सग, मप, धरे, (२) सरे, गध, पम, (३)
 सम, रेप, गध, (४) सरे रेग, गम, मर, पर, (५)
 धप, पम, मग, गरे, रेसा, (६) सारेग, रेगम, गमप,
 मपध, (७) धपन, पमग, मगरे, गरेसा, (८) सारेगम,
 रेगमप, गमपध, (९) धपमग, पपगरे, मगरेसा, (१०)
 स ग रे म ग प म घ (११) धम पग मरे गस (१२)
 सरे सग सम सप (१३) सध, धप, धम, धग, धरे,
 धसा,

शि. सु. उपर लिखेहुये स्वरों को सिखलाने के बाद उसी स्वरों
 मे से अलग जलग स्वर विद्यार्थियों को पूछना वह यह प, रे,
 ध, ग, स, म, इत्यादि, इस प्रकार जब ठीक स्वरों मे आवे तो
 नीचे लिखी हुई सारिगम जिस लयकारी मे दीई है उसी लयकारी
 मे सिखलानी.

| | |
|--------|------------------------------|
| तार | |
| मध्य | स॒ रि॒ स॒ ग॒ स॒ म॒ ग॒ रि॒ प॒ |
| मन्द्र | |

१ इस चिन्ह का नामः—गुरु विश्रानी है. यह चिन्ह जिस
 जगे आयेगा. वहा स्वरों का उच्चारण न करके. केवल दो मात्रा

पाठ ३ श.

| | |
|--------|-----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | ध स प ग स रि सु रि गु गु प ध ऽ सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------|
| तार | |
| मध्य | सु रि गु गु प सु |
| मन्द्र | |

ऽ इम चिन्हका नाम:-लघुविश्रांती है, जिस जगे यह चिन्ह आवेगा, वहा स्वर का उच्चारण न करके केवल एक मात्रातक दम लेना.

| | |
|--------|---------------------------------|
| तार | |
| मध्य | ध प ध म ऽ ध म ग रि ऽ रा रि गु म |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | |
| मध्य | पश्चात्तरिगुसुपान्तरिगुमासूरा |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------|
| तार | |
| मध्य | पसधसपसुरिगुत्पसुधुसु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | |
| मध्य | पसुरिगुमात्तुर्गुर्गुर्गुर्गु |
| मन्द्र | - |

नंबर १.

| | |
|------|----------------------|
| मध्य | सरिगसपधनि धपमग रिस्, |
|------|----------------------|

नंबर २.

| | |
|------|-----------------------------|
| मध्य | सरिग, रिगस, गसप, सपध, पधनि, |
|------|-----------------------------|

| | |
|------|---------------------------------|
| मध्य | धपध, धसप, सगस, गरिग, रिसरि, सं. |
|------|---------------------------------|

नंबर ३.

| | |
|------|----------------------------|
| मध्य | सग, रिमं, गप, सध, पनि, नि, |
|------|----------------------------|

| | |
|------|------------------|
| मध्य | धम, पग, मरि, गस, |
|------|------------------|

नंबर ४.

| | |
|------|------------------------|
| मध्य | सरिगस, रिगसप, गसपध, सप |
|------|------------------------|

| | |
|------|--------------------------|
| मध्य | धनि, निधयम, धपमग, पमगरि' |
|------|--------------------------|

| | |
|------|--------|
| मध्य | मगरिस, |
|------|--------|

नंबर ५.

| | |
|------|-------------------------|
| मध्य | सरिगमप, रिगमपध, गमपधनि, |
|------|-------------------------|

| | |
|------|-------------------------|
| मध्य | निधयमग, धपमगरि, पमगरिस, |
|------|-------------------------|

नंबर ६

| | |
|------|---------------------------|
| मध्य | रुरिगमपध, रिगमपधनि, निधपम |
|------|---------------------------|

| | |
|------|---------------|
| मध्य | गरि, धपमगरिस, |
|------|---------------|

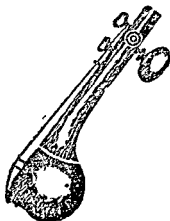
शि० सु०-उपर के स्वर विचारियोंको ठीक याद होनेके बाद, उसमेमे अलग अलग, स्वर कठसे निदालनेको कहेना चाहिये जिसे उनको स्वा लगाने की सुगमता होगी.

उदाहरण.

गु गु गु गु गु गु गु गु गु गु रि रि रि रि रि रि
 गु सु पु पु पु पु पु पु पु पु पु धु पु सु रि गु सु पु धु
 नि सु

१ सु रि गु सु रि गु सु रि गु सु पु गु सु पु
 गु सु पु गु सु पु धु नि सु रि गु सु पु धु नि धु
 पु सु गु रि सु

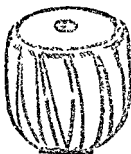




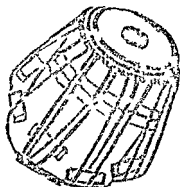
इस वाद्यका नाम तानपुरा (तंपुरा) है. इसमें चार तारे
 झाँई जाती है. पहिलीतार पीतलकी हुमरी दो तारे पोलादकी
 (स्टीलकी) और चौथी पीतलकी तार होती है. बीच की जो दो
 तारे होती है उसे थोड़ी पहिली बढी चाहिये और उसे जादा
 ढ थी बढी चाहिये.

बिचके तारोको मध्यके पट्टनमें भिन्नाया जाता है और
 पहिली जो पीतलकी तार होती है उसको मद्र के पचनमें भिन्नाया
 जाना है और चौथी तार जो है उसको मंदके पट्टन में भिन्नाया
 जाता है इस तंबोरेका उपयोग स्वर के राप्ने या गानेके साथ
 किया जाता है.

वाया

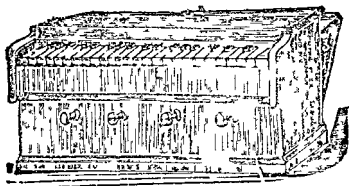


तबला



इस वाद्यका नाम तबला और बया करके है दाहने हाथके तरफ जो है उसका नाम तबला ओर बाये हात के तरफ जो है उसका नाम बाया इस तबले वायेको गानेके साथ या किसिबाद्य के साथ लयकारी में बजाया जाना है जिसे गाना बजाना कानको जाधिक श्रच्छा मान्य होता है.

हारमोनियम.



इस वाद्यका नाम हरमोनियम है, यह पाय गाने के साथ

छोअर प्रायमरी ६ श्रणी.

राग विहाग.

तीन ताल.

| | | |
|--------|-----------------|-------------|
| तार | | सु सु |
| मध्य | सु ग सु प नि धु | नि नि धु नि |
| मन्द्र | | |

भ क्ति सिखा वो • ह म को • ३ • २ • १ • २ • ३ •

| | | |
|--------|--------------------------|------|
| तार | | |
| मध्य | सु प ग सु ग रि ग सु प धु | सु प |
| मन्द्र | | |

श्व र ध म व ता • ३ • २ • १ • ३ • २ • १ •

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | गु म् गुरि ग् सु सम् ग् |
| मन्द्र | नि नि नि नि |
| | को . ई . श्व र वि षा प ढा वे २ ३ २ १ |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु गुरि सु . ५ सु गु म् पु . धु पु धु गु |
| मन्द्र | |
| | लासा . री ध र्म केसा हये . जा २ ३ २ १ |

| | |
|--------|-------------------------|
| तार | |
| मध्य | धु पु गु म् गुरि ग् सु |
| मन्द्र | नि |
| | . . वे . सा . री . २ |

राग . खमाज.

ताल ध्रुमाली.

| | |
|--------|---------------------------------------|
| तार | सु सु |
| मध्य | सु सु गु गु गु सु पु पु पु पु पु ५ नि |
| मन्द्र | |

भां ति भां ति के • कु ल खिले हे भ ई भै

| | |
|--------|---------------------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | धु ५ नि धु सु पु सु ५ नि धु पु • ५ नि |
| मन्द्र | |

म कृ त्ति न दे • स र न्द कमी

मध्यलयकारी मे गाना.

| | |
|--------|---------------------------------|
| तार | सु सु सु |
| मध्य | नि नि - ५ नि धु Δ सु पु • गु गु |
| मन्द्र | |

हारे ह मा • • • रा • सखा

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | रि गु गु गु पु धु Δ सु पु • ५ गु गु नु रि |
| मन्द्र | |

स हे ला • • • • • दू ध दि •

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | गु ५ सू . ५५ सु ल ५५ |
| मन्द्र | नि १ नि |
| | दि या मा ख को |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु गु गु गु गु गु गु सु गु गु पु गु पु पु |
| मन्द्र | |
| | सू र ज को जो ती दे ता दे र हा रूप है |

| | |
|--------|--|
| तार | सु सु |
| मध्य | गू धु धु पु नि नि पु पु धु पु धु |
| मन्द्र | |
| | फूल न को प क्षी ना ना फल दे ना ना |

| | |
|--------|-------------------------|
| तार | रि रि सु . ५ |
| मध्य | गु गु मू पु पु धु नि नि |
| मन्द्र | |

हि त हे फ र ता ज न ज न को

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | मु गु गु सु गु गु सु गु सु गु षु |
| मन्द्र | |

वृ क्ष हि सुं द र औ र ल ता से



राग खमाज.

तालरूपक.

| | | | | | | | | | | | | | |
|--------|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|-----|---|
| तारं | १ | २ | ३ | ४ | ५ | | | | | | | | |
| मध्य | स | म | ग | म | ग | स | प | प | प | प | प | पु० | ५ |
| मन्द्र | नि | | | | | | | | | | | | |

शा • न के • तु म ज्ञान भगव • न्
३ २ २ ३ २ २

| | | | | | | | | | | |
|--------|---|----|-----|----|-----|---|---|----|-----|----|
| तार | स | | | | | | | | | |
| मध्य | ५ | नि | पु० | धु | पु० | ग | म | धु | पु० | धु |
| मन्द्र | | | | | | | | | | |

प्रा ण के • • • तु म प्रा • •
३ २ ३

| | | |
|--------|----------------------|------------|
| तार | | |
| मध्य | पु सु • ५ ग रि ग • ९ | नि नि नि • |
| मन्द्र | | |

• ण हो • • च क्षु के
० ० ३ २

| | | | |
|--------|-------|----|---------------------|
| तार | | सु | |
| मध्य | नि नि | नि | ५ नि ५ नि ध प म ग म |
| मन्द्र | | | |

तु म च क्षु भ ग व न का न के
२ ३ २ २ ३ ०

| | | | |
|--------|-----|-------------|--|
| तार | | सु | |
| मध्य | प ध | प ध म ग ९ ९ | |
| मन्द्र | | | |

तु म का • न हो •
३ २ २

श्रेणी ५ वी.

ताल धुमाली.

| | |
|--------|---------------------------------|
| तार | |
| मध्य | पु० धुपुमुगुरिपु० धुपुमुगुरिपु० |
| मन्द्र | |

ध न्य हे • प्र भु ना म ते • रा • ध

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | |
| मध्य | धुपुमुगुरिगु० सुपु० ५ गु० सुगु |
| मन्द्र | |

न्य त व क रु णा ह री ध न्य वि

| | |
|------------------------------------|--|
| तार | . |
| मध्य | गु रि रि पृ • धु पु मु गु रि गृ • पु मु गु |
| मन्द्र | |
| तु व तस्ने ह ते • रा • जो न त्या • | |

| | |
|----------------|----------------------|
| तार | |
| मध्य | रि सु गु रि सु १ • ५ |
| मन्द्र | नि |
| घा • तु म क भी | |



राग भीमपलासी.

ताल रूपक.

| | | |
|--------|----------------------------|------|
| तार | | |
| मध्य | प म ध्र पृ गं गं रि सु • ५ | रि |
| मन्द्र | | नि • |

ध • न्य • तू • क र ता •
३ २ २ ३

| | | |
|--------|----------------------------|----------|
| तार | | |
| मध्य | सू • ५ मु गृ • ५ रि सु • ५ | सू रि सु |
| मन्द्र | | |

र म • रा • ध न्य •
१ २ ३ ३

| | | |
|--------|-------|-------------------------------|
| तार | | |
| मध्य | सु म् | सु म् सु गु • पु सु • धु पु • |
| मन्द्र | नि | |

वृज ग दी श्व रा • • • •
२ २ ३ २ २

| | | | | |
|--------|--------|---|--------|------------|
| तार | | २ | | |
| मध्य | नि • ५ | ६ | प प पु | सु प नि नि |
| मन्द्र | | | | |

• ध न्य हे कृ पा • य
३ २ ० ३

| | | |
|--------|----------------------|--------------|
| तार | सु | |
| मध्य | नि नि • नि • धु पु • | प सु धु पु • |
| मन्द्र | | |

ह ते • • री • ध • न्य •
३ ३

| | | |
|--------|------------|---------------|
| तार | | |
| मध्य | सु गु • सु | सु सु सु |
| मन्द्र | नि नि | नि • सु |
| | तू • • प र | मे • • श्व रा |
| | २ २ | ३ ३ |

| | | |
|--------|-----------------|----------------|
| तार | | |
| मध्य | सु सु गु • सु प | प प प ग म |
| मन्द्र | नि • | |
| | • • • • • | धन्य सृ ष्ठी • |
| | २ २ | ३ २ |

| | | |
|--------|--------------|-----------|
| तार | सु सु • ५ ५ | सु सु |
| मध्य | प नि नि | नि नि |
| मन्द्र | | |
| | क र ता हे तू | को न म हि |
| | ३ २ २ | ३ २ |

| | | |
|--------|---------|-------------------|
| तार | सु • ५५ | सु म ग रि सु • ५५ |
| मध्य | | नि |
| मन्द्र | | |

मा गा • स के • •
 २ ३ २ २

| | | |
|--------|--------------------------|--|
| तार | सु सु रि सु • | |
| मध्य | नि नि ध्रु षु | |
| मन्द्र | | |

व्या स ह • • तू • •
 ३ २ •

१. और २ के अंक इगवास्ते दिये दे पादिते गाते
 समय १ अंक के निपाद तक गाकर फिर पादिते मे
 गाना और १ अंक को छोड़कर २ अंक को लेके
 आगे चलना.

कल्याणी खमाज.

सवने मिलके गाना.

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु गुरु सु रि ग ग ग ग गुरु रि गुरु |
| मन्द्र | |

ह • री • • सु ध लो जी ये • मे •

| | |
|--------|------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु सु • सु सा सु प प ५ नि धु |
| मन्द्र | धु |

• री ग ई • अ व श र ण

| | | |
|--------|------------------------|--|
| तार | | |
| मध्य | प ध्रु पृ शु षु गु ॐ १ | |
| मन्द्र | | |

मे . . ते . री

अक्रेलेने गाना.

| | | |
|--------|---------------|-------------------------|
| तार | | |
| मध्य | मृ गृ रि ङ्रि | स् गृ गृ गृ गृ गृ गृ गृ |
| मन्द्र | | |

ह . री . . हे दा नाना ४ दिर्दं ५

| | | |
|--------|---|--|
| तार | | |
| मध्य | रि रि गृ स् ॐ १ मृ पृ पृ पृ रि ३ म ४ पु | |
| मन्द्र | | |

. री . . वृ ङि पि ५ ६ ७ ८

| | | |
|--------|-------|------------------------------|
| तार | | |
| मध्य | सू ग् | ग म ध ध ध ध ध ध ऋ नि ध प ढ म |
| मन्द्र | | |

• री प्र भु तू हि ज ग त का . रा •

| | | |
|--------|----------|------------------------|
| तार | | |
| मध्य | पु इ ग म | प ढ म पु ढ म पु ढ म पु |
| मन्द्र | | |

जा य ह स व कु छ तु म रा

| | | |
|--------|-----------------|--|
| तार | | |
| मध्य | रि रि ग ङ प स ग | |
| मन्द्र | | |

• ह . का . जा •

सिंधु भैरवी.

ताल धुमाळी.

| | | |
|--------|--------------------|------------------|
| तार | | |
| मध्य | स॒ ५ ध॒ प॒ प॒ ५ ध॒ | स॒ स॒ प॒ ५ ग॒ स॒ |
| मन्द्र | | |

आ वो व हि नो य हि नो प्या री
 १ २ ३ २ १ २ ३ २

| | | |
|--------|---------------------------|--------------------|
| तार | | |
| मध्य | प॒ ५ नि॒ ५ नि॒ ५ उ॒ प॒ स॒ | ५ गु॒ रि॒ ५ ग॒ रि॒ |
| मन्द्र | | |

रु श र के ह ग गु ण गा
 १ २ ३ २ १ २

| | | | |
|--------|------|----------------|----------------|
| तार | | | |
| मध्य | सु I | सु सु षग रि षग | रि तु रि तु सु |
| मन्द्र | | | ५नि |

वे . म धु तु मे रा प र म स खा हे
३ २ १ २ ३ २ १ २ ३ २

| | | | |
|--------|-------------|------|-----------------|
| तार | | सु | |
| मध्य | सु ष ग सु प | ५ नि | ५ धु तु ५ नु रि |
| मन्द्र | ५ नि | | |

व ल व ल ते रे . हि . जा .
१ २ ३ २ १ २

| | | | |
|--------|------|------------------------|----------|
| तार | | | सु सु सु |
| मध्य | सु I | ५ धु ५ धु सु ५ धु ५ नि | |
| मन्द्र | | | |

ये : हे ज न नी हे ज ग त
३ २ १ २ ३ २ १ २

| | | |
|--------|-----------|--------------------|
| तार | शु सु र. | सु सु सु |
| मध्य | | ५नि ५नि ५नि ५नि |
| मन्द्र | | |
| | श्री अ मा | तु म स ग श्री ति ल |
| | ३ ० | १ ० ३ ० |

| | | |
|--------|---------------|------------|
| तार | सु ५रि सु | |
| मध्य | ५नि ५पु ५पु | ५नि ५नि धु |
| मन्द्र | | |
| | गा . . . वे . | प्रे म रु |
| | १ ० ३ २ | १ २ |

| | | |
|--------|---------|--------------------|
| तार | सु | |
| मध्य | ५नि ५नि | ५धु ५धु ५धु ५धु पु |
| मन्द्र | | |
| | र ह म | स त्य गु णा से |
| | ३ २ | १ २ ३ २ |

| | | | |
|--------|-------------------------|-------------------------|-------------------------|
| तार | | स् | |
| मध्य | लु लु लु लु लु लु लु लु | पु पु पु पु पु पु पु पु | पु पु पु पु पु पु पु पु |
| मन्द्र | | | |

हि स वि ध द र ल न पा ये
१ २ ३ - १ २ ३ ७

| | | |
|--------|-------------------------|-------------------------|
| तार | | |
| मध्य | पु पु पु पु पु पु पु पु | सु सु सु सु सु सु सु सु |
| मन्द्र | | |

गो द पे खे ले ते रे ई श्व र
१ २ ३ २ १ २ ३ २

| | | |
|--------|-------------------|----------------------------|
| तार | | |
| मध्य | | स् पु पु पु पु पु पु पु पु |
| मन्द्र | पु नि पु नि पु नु | |

भ क्ति से सी स न वा ये
१ २ ३ २ १ २ ३ २

भैरवी.

(सवने पीलाके गाना.)

| | | |
|--------|-------------|--------------------------------|
| तार | | |
| मध्य | प॒ प॒ प॒ प॒ | ५ध्रु॒ ५नि॒ ५ध्रु॒ प॒ ५गु॒ सु॒ |
| मन्द्र | | |
| | र चा म भु | तु • ने • य ह |
| | १ २ | १ ? |

| | | | | |
|--------|-----------------------------|------------|--|-----|
| तार | | | | |
| मध्य | पु॒ ५नि॒ ५त्रु॒ प॒ ५गु॒ सु॒ | रि॒ मु॒ ५५ | | सु॒ |
| मन्द्र | | | | |
| | ध्रं • ह्या • न्द | सा रा | | मा |
| | १ २ | १ २ | | १ |

| | | |
|--------|---------------------|------------------------|
| तार | | |
| मध्य | ५गु ५गु ५गु ५गु ५गु | सु ५गु ५गु ५गु ५गु ५गु |
| मन्द्र | | |

• णो से प्या • • • रा •
२ १ २

| | | |
|--------|----------------------------|------------------------|
| तर | | |
| मध्य | पु ५नि ५धु ५धु ५धु ५धु ५धु | मु ५गु ५गु ५गु ५गु ५गु |
| मन्द्र | | |

तु • हि • स व से • न्या रा
१ २ १ २

| | | |
|--------|---------------------|---------------|
| तार | | सु सु ५गु ५गु |
| मध्य | ५धु ५धु ५धु ५धु ५नि | ५नि ५नि |
| मन्द्र | | |

तु हि भा ई व धु तु हि
१ २ १ २ १

| | | | |
|--------|----------|---------|---------------|
| तार | सु सु सु | ५ रि सु | सु ५ रि |
| मध्य | | | ५ नि ५ ध्रु प |
| मन्द्र | | | |

ज ग त ज न नी • • म फ
 २ १ २ १

| | | |
|--------|-----------|-----------------------------|
| तार | सु सु | |
| मध्य | ५ नि ५ नि | ५ ध्रु ५ नि ५ ध्रु प ५ ध्रु |
| मन्द्र | | |

ल ज ग त म • • ए •
 २ १ • २

| | | | |
|--------|----|---------------------|--------------|
| तार | | | |
| मध्य | पु | सु सु सु रि ५ गु सु | ५ रि सु सु ट |
| मन्द्र | | | |

फ त • • रा • प सारा
 १ २ १ २

अकेलेने गाना,

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | ५ नि धु ५ नि धु ५ नि धु पु धु मू • ५ मू |
| मन्द्र | |

ध म द ध स . . . ' ५

| | |
|--------|--|
| तार | सू |
| मध्य | पु पु पु पु ५ धु ५ नि ५ धु ५ नि ५ धु ७-९ |
| मन्द्र | |

ता तु म ह म को . पा . लो

| | |
|--------|--------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | पु पु ५ नि ५ धु पु म म रि सु पु ५ धु |
| मन्द्र | |

दे वा खी . ल वि या का . .

| | |
|--------|-------------------------|
| तार | |
| मध्य | पु सु षगु रि सु सु षरि |
| मन्त्र | ५नि ५लि ५नि अ प ने . |

.

| | |
|--------|------------------|
| तार | |
| मध्य | ५ सु ५ रि सु ५ ५ |
| मन्त्र | |

भ हा रा



राग आसावरी.



| | |
|--------|---|
| तार | सु |
| मध्य | पू ऽ न्ति ऽ ध्रु पू ऽ ध्रु म् पु ऽ ध्रु म् पु |
| मन्द्र | |

हे . . म भू पू . र . ण .
३ २

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | ऽ गू सु रि म् म् पु . ऽ म् पु ऽ ध्रु ऽ ध्रु |
| मन्द्र | |

ना . . थ ह मारे को न को न
३ २ ३ २

| | | | |
|--------|-------|--------------------|-----------|
| तार | सु सु | सु सु रि ऽ गुरि सु | सु रि सु |
| मध्य | | | ऽ नि ऽ नि |
| मन्द्र | | | |

गु ण क हे . . तु . ङ्गा . . . रे
 १ २

| | | |
|--------|------------|--------------------------|
| तार | | |
| मध्य | ऽ धु पु सु | मू प ऽ धु ऽ धू ऽ धू ऽ धू |
| मन्द्र | | |

. . . द या ते री ह री
 ३ २

| | | |
|--------|-----------|----------------|
| तार | | सु सु ऽ ग ऽ गू |
| मध्य | ऽ धू ऽ धू | ऽ नि |
| मन्द्र | | |

अ प र पा . रा तू नि

| | | | |
|--------|-----------|-------|----------|
| तार | ५ गृ रि स | सृ सृ | सु रि सु |
| मध्य | | ५ नि | ५ नि |
| मन्द्र | | | |

प्र भू हे द या म डा . . .
 २ १ ०

| | | |
|--------|----------------|--|
| तार | | |
| मध्य | ५ ति ५ धु प सु | |
| मन्द्र | | |

रा . . .

→ॐ { समाप्त. } ॐ←

राग भिमपलासी.

धन्य तू करतार मेरा इस भजन के अंतरे के अखेर की दो लाईन रही थी वह आगेके माफक. यह दो लाईन व्याप्त है तूं इसके साथ जोडकर गाना और फेर पिछे अस्ताई बोलना.

| | | |
|--------|---------------|-----------------|
| तार | | |
| मध्य | ध प म ग म म | सु सु ग म म . ९ |
| मन्द्र | | नि |
| | ज ग त मा . ही | गु ण न ते . र |
| | ३ २ २ | ३ २ २ |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | ग म प नि नि ध प म ग रि सु . ५ |
| मन्द्र | |
| | पा स . के |
| | ३ २ ५ २ |

गांधर्व महा विद्यालय.

क्रमिक (series) पुस्तकें.

इस विद्यालयमें पं. विष्णु दिगंबरजीने संगीत विद्यापर आज-
एक जा किताबें तय्यार कीं हैं उनके नाम और किंमत.

| | भाग. | रु. | भा. |
|---------------------------------------|------|--------|-------|
| बालोदय संगीत हिंदी. | १ | ... | २ |
| ” ” मराठी. | १ | ... | ४ |
| महिला संगीत हिंदी. | १-२ | ... | ६ |
| राम नामावली | | ... | २ |
| संगीत तत्त्वदर्शक. | १ | ... | ८ |
| अस्मिता अलफा | १ | ... | ८ |
| द्वारभोगनियमप्रकाश हिंदी और उर्दू | १ | ... | ८ |
| ” ” ” | २ | ... | १२ |
| ” ” ” | ३ | ... | १० |
| ” ” केवल हिंदीमें | ४ | ... | ४ |
| संगीत बालबोध हिंदी और उर्दू. | १ | ... | ८ |
| संगीत बालबोध द्वितीय भाग. | २ | ... | ० |
| स्वल्पश्लेष गायन. | १ | ... | ० |
| रागप्रवेश. | १-१३ | ... | ११ ० |
| व्यायामके साथ संगीत. | १-२ | ... | १ ८ |
| संगीत प्रथम भाग हिंदी | | ... | २ ० |
| ” द्वितीय ” ” | | ... | ३ ० |
| राग भैरव. | | ... | २ ० ० |
| राग मालवस. | | ... | २ ० ० |
| मदम और तनलेखी पुस्तक. | | ... | १ ० ० |
| सतारकी पुस्तक हिंदी | | ... | १ ० ० |
| ” उर्दू. | | ... | ० ८ ० |
| नारदार्याशिक्षा भाषा टीका समेत हिंदी. | | ... | १ ० ० |
| भजनामृत लहरी. | | १-५... | २ ८ ० |

मैनेजर

गांधर्व महा विद्यालय, बंबई.

॥ श्रीगुरु प्रसन्न ॥

[] * गांधर्व महा विद्यालय. * [१९२०



अंकित अलंकार.

(प्रथम भाग.)

संपादक, मुद्रक, और प्रकाशक

श्रीमान् पंडित विष्णु दिगंज पल्लवरु.

गायनाचार्य, मास्टर ऑफ इंडियन म्यूजिक, प्रिन्सिपॉल.

गांधर्व महा विद्यालय- बंबई द्वारा रचित.

इस पुस्तक के छापनेका सब अधिकार मुस्ताकचर्मी अपने स्वयंन रखा है

चतुर्थी

मती २०००.

मूल्य ८ आना

मुद्रक श्री विष्णु दिगंज पंडित सेंटर, बंबई

उद्देश.



प्रायः देखा गया है की जो सज्जन गायन विद्या सीखने का प्रेम रखते हैं और किसी गायक से गायन सीखना शुरू करते हैं. उम्र समय उन के दिल में जरूर यह विचार आता रहता है कि, हम जल्दी से तान आलाप को गाना शुरू कर दे, परंतु यह उन की अभिलाषा पूरी होने में बहुत कठिणता पड़ती है. यह बात पर जब हमने अपने मन में विचार किया तब यह मान्य हुआ कि कोई ऐसी पुस्तक बनाई जाय की जिस के पढ़ने में और उम्र पर से अभ्यास करने में उन की अभिलाषा पूरी हो जाय हम लिए हमने 'तान' के पुस्तक को प्रकाशित किया है. इस पुस्तक के दो भाग होंगे जिस में से यह पहला भाग प्रकाशित करते हैं. हम उम्मीद करते हैं कि इस पुस्तक में संगीत प्रेमी लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रम को कृतार्थ करेंगे.

भारत

विष्णु दिगंबर पाण्डुकार.

अनुक्रमणिका.

| नंवर. | | | पृष्ठ. |
|-------|-------------|-----|-----------|
| १ | अवशक सूचना. | ... | ... १...४ |
| २ | अकित अलकार. | ... | ५. ८६ |

हमारे यहा के लेखनपद्धती (नोटेशन सिस्टम्) को समजने के लिये संगीत तत्त्वदर्शक को पढना चाहिये.

अवश्यक सूचना.

इसमें जो अल्फार लिखे हैं उनको गानेमें तयार करने के लिए निम्न लिखित क्रम के अनुसार करना चाहिए.

प्रथम जो स रि ग म लेखन पद्धती पर लिखिहे उस को लय के साथ कह कर तत् पश्चात् आ इ उ ए इन अक्षरों में से हरएक अक्षर को ले के उनी स्वरों में आलापना चाहिए

उदाहरण.

स्वरा सारि ग म प ध नि ध प म ग र म .
अलाप आ आ आ आ आ आ आ आ आ आ आ आ आ

इसी तरह और अक्षरों को भी गानमें कहना होगा

इस में नितने अल्फार लिखे हैं यह केवल शुद्ध ही गाने में है उनको भैरव, भैरवी, मालकंज, हिंडोल, मारंग, कौञ्जिया, भूपाली, फल्गुणा, पुरिया. वगैरे गानों में तान आलाप करने के लिये आगे लिखे हुए गान के नियम को देखने से कानमें स्वर स्वर करना या कानमें कौमल. नैपना गभरा सीमान करना चाहिए यह मान्य होगा

राग भूपाली.

इस में मध्यम और निषाद वर्ज, बाकी सब शुद्ध स्वर.

सु रि ग प ध सु ध प ग रि सु

राग कल्याण.

इस में केवल मध्यम तीव्रतर बाकी के सब शुद्ध स्वर.

सु रि ग सु प ध नि सु नि ध प सु ग रि सु

राग धरिया.

इस में पंचम वर्ज, रिपम धैवत अतिअतिकोमल म तीव्रतर,
गधार और निषाद शुद्ध.

सु रि ग सु ध नि सु नि ध सु ग रि सु

राग भैरव.

इस में रिपम, धैवत अतिकोमल बाकी के सब शुद्ध स्वर.

सु रि ग सु प ध नि सु नि ध प सु ग रि सु

राग भैरवी.

इसमें रिषभ, गंधार, धैवत, निषाद, अतिशोमल बाकीके
सब शुद्ध स्वर

सु रि ग म प ध नि सु नि ध प म ग रि सु

राग मालकंस.

इसमें रिषभ, पचम वर्ज. गंधार, धैवत, निषाद शोमल, मध्यम शुद्ध

सु ग म ध नि सु नि ध म ग सु

राग सारंग.

इसमें गंधार धैवत वर्ज निषाद दो एक शुद्ध और
अतिशोमल, बाकीके सब शुद्ध स्वर.

सु रि म प नि सु नि प म रि सु

राग हिंडोल.

इसमें रिषभ, पचम वर्ज. मध्यम तीव्रतर, बाकीके सब शुद्ध स्वर.

सु ग म ध नि सु नि ध म ग सु

राग कौशिया.

इस में सब शुद्ध स्वर.

सु रि ग म पु धु नि सु नि धु पु म ग रि सु

राग तोड़ी.

इस में रिषभ, गधार धैवत अतिकोमल मध्यम तीव्रतर
बाकीके सब शुद्ध स्वर.

नि रि ग म धु नि सु नि धु पु म ग रि सु

राग बिभास.

इसमें रिषभ, धैवत अतिकोमल. मध्यम, निपाद वर्ज
बाकीके सब शुद्ध स्वर.

सु रि ग पु धु सु धु पु ग रि सु

॥ श्रीगुरु प्रसन्न. ॥

अंकित अलंकार

तान और आलाप सब प्रकार से सुंदर और मनोहर होने के लिये गे वातों का होना जरूरी है एक तो यह की वही तान व आलाप बार २ न आये और दूसरे तान व आलाप के स्वर यथा क्रम हो इस के वास्ते स्वरों का नियमबद्ध होना अत्यावश्यक है इस के लिये शास्त्रकारों ने अलंकार बनाये हैं परन्तु वह अंकित न होने से उपयोग में नहि लये जा सके अतः वट अलंकार इस पुस्तक में विस्तार पूर्वक अंकित लिखे है सगीत रसीक तान व आलाप के तयार करने के लिये इन अलंकारों को यथा विधि अभ्यास करेंगे तो बहुत लाभकारी होगा. ॥

नंबर १.

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु रि गु रि सु . ५ सु रि गु सु गु रि |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|------|-------------------------------|
| तार | | |
| मध्य | सु.५ | सु रि गु मु पु मु गु रि सु. ५ |
| मन्द्र | | |

| | | |
|--------|--|--------------------------------------|
| तार | | |
| मध्य | | सु रि गु मु पु धु पु मु गु रि सु . ५ |
| मन्द्र | | |

| | | |
|--------|--|--|
| तार | | |
| मध्य | | सु रि गु मु पु धु नि धु पु मु गु रि सु.५ |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|-------------------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | सु रि गु मु पु धु नि नि धु पु मु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | सु रि |
| मध्य | रि सु . ५ सु रि गु मु पु धु नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-----------------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | नि धु पु मु गु रि सु . ५ सु रि गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | सु रि गु रि सु |
| मध्य | मु पु धु नि नि धु पु मु गु |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-----------|----------------------|
| तार | | सु रि |
| मध्य | रि सु . ५ | सु रि गु मु पु धु नि |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|--------------------------|
| तार | गु मु गु रि सु |
| मध्य | नि धु पु मु गु रि सु . ५ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------|
| तार | सु रि गु म पु सु |
| मध्य | सु रि गु म पु धु नि |
| मन्द्र | |

| | | | |
|--------|-----------------------|--|--|
| तार | गु रि सु | | |
| मध्य | नि धु पु म गु रि सु.५ | | |
| मन्द्र | | | |

नंबर. २

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु रि सु रि ग रि ग म ग म प म प ध प |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | सु सु सु सु |
| मध्य | धु नि धु नि नि नि नि नि धु नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | धु प धु प सु प सु गु सु गु रि गु रि सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | रि सु . ऋ सु रि सु रि गु रि गु सु गु सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | सु सु रिसु |
| मध्य | पु सु पु धु पु धु नि धु नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु |
| मध्य | नि नि धु नि धु पु धु पु सु पु सु गु सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | गु रि गु रि सु रि सु . ङ सु रि सु रि गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | |
| मध्य | रि ग म ग म प म प ध प ध नि ध नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------|
| तार | स स रि स रि ग रि स रि स स |
| मध्य | नि नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | ध नि ध प ध प म प म ग म ग रि ग रि |
| मन्द्र | |

स॒ रि॒ सु॒ . ॐ | स॒ रि॒ सु॒ रि॒ ग॒ रि॒ ग॒ म॒ ग॒

स॒ सु॒ रि॒

म॒ प॒ न॒ प॒ ध॒ प॒ ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ नि॒

स॒ रि॒ ग॒ रि॒ ग॒ म॒ ग॒ रि॒ ग॒ रि॒ सु॒ रि॒ सु॒

नि॒

| | |
|--------|---------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | नि ध नि ध प ध प म प म ग म |
| मन्द्र | |

| | |
|------|-----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | रि ग रि स रि सु. ऋ सु रि स रि ग |
| तार | |

| | |
|--------|-----------------------------|
| तार | |
| मध्य | ग म ग म प म प ध प ध नि ध नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | स॒ रि॒ स॒ रि॒ ग॒ रि॒ ग॒ म॒ ग॒ म॒ प॒ म॒ ग॒ |
| मध्य | नि॒ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | म॒ ग॒ रि॒ ग॒ रि॒ स॒ रि॒ स॒ स॒ |
| मध्य | नि॒ नि॒ घ॒ नि॒ घ॒ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | प॒ प॒ म॒ प॒ म॒ ग॒ म॒ ग॒ रि॒ ग॒ रि॒ म॒ रि॒ म॒ . ५ |
| मन्द्र | इति मः |

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु ग रि सु रि म ग रि ग प म ग म |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | ध प म प नि ध प ध नि ध ध नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | ध प ध नि प म प ध म ग म प |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | गु रि गु म् रि सु रि गु सु.५ सुगु रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु रि म् गु रि गु प् म् गु म् धु षु म् |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | सु रि सु |
| मध्य | पु नि धु पु धु नि धु नि नि नि |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|--------------------------|----|
| तार | सु रि | सु |
| मध्य | नि ध नि ध प ध नि प म प ध | |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|-------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु ग सु प ग रि ग सु रि सु रि ग सु.५ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु ग रि सु रि सु ग रि ग प सु ग सु |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|----------------------------------|------|
| तार | सु | रिसु |
| मध्य | धु पु मु पु नि धु पु धु नि धु नि | |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | सु गु रि सु सु रि गु सु सु रि |
| मध्य | नि नि नि धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु |
| मध्य | नि धु पु धु नि पु मु पु धु मु गु मु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | गुं रिं गुं मृं रिं सुं रिं गुं सु . ५ सुं गुं |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | रिं सुं रिं मृं गुं रिं गुं पुं मृं गुं सुं धुं पुं |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | सुं रिं सुं |
| मध्य | सुं पुं निं धुं पुं धुं निं धुं निं निं |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | सु सु रि सु रि नु गु रि रि गु म् रि सु रि |
| मध्य | |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | गु सु सु रि सु |
| मध्य | नि नि धु नि धु पु धु नि पु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | पु धु मु गु मु पु गु रि गु नु रि सु रि गु |
| मन्द्र | |

| | |
|------|---|
| सार | |
| मध्य | खु . ५ ; ङु ङु रि ङु रि ङु ङु रि ङु ङु ङु |
| शब्द | |

| | |
|---|---|
| त | नु |
| त | नु ङु ङु ङु ङु ङु नि ङु ङु ङु नि ङु ङु नि |

— ङु ङु रि ङु रि ङु ङु रि ङु ङु ङु

| | |
|--------|--|
| तार | प्रकार. २ |
| मध्य | सु लु गु गुरि रि लु लु रि रि मु मु गु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | रि रि गु गु पु पु मु मु गु गु लु लु धु धु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु सु |
| मध्य | पु मु मु पु पु नि नि धु धु पु पु धु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| नार | सुसु |
| मध्य | नि नि धु धु धु धु नि नि धु धु |
| मन्द्र | |
| नार | |
| मध्य | पु पु धु धु नि नि पु पु मु मु पु पु धु धु |
| मन्द्र | |
| नार | |
| मध्य | मु मु गु गु मु मु पु पु गु गु रि रि गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | गु मु मु रि रि सु सु रि रि गु गु सुसु. ॐ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु सु गु गु रि रि सु सु रि रि मु मु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | गु रि रि गु गु पु पु मु मु गु गु मु मु धु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | सु सु |
| मध्य | पु पु मु मु पु पु नि नि धु धु पु पु धु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | रि रि सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु नि नि नि नि नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------|
| तार | सु सु रि रि सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु नि नि धु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | पु पु धु धु नि नि पु पु मु मु पु पु धु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु गु गु मु मु पु पु गु गु रि रि गु गु मु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | रि रि सु सु रि रि गु गु सु सु सु सु |
| मन्द्र | |

तार

मध्य

गु रि रि सु सु रि रि मु मु गु गु रि रि गु

मन्द्र

तार

मध्य

गु पु पु मु मु गु गु सु सु धु धु पु पु मु मु

मन्द्र

तार

सु सु

मध्य

पु पु नि नि धु धु पु पु धु धु नि नि धु

मन्द्र

| | | |
|--------|-------------|----------------|
| तार | रि रि सु सु | सु सु गु गु रि |
| मध्य | धु नि नि | नि नि |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | रि सु सु सु सु रि रि गु गु सु सु |
| मध्य | नि नि |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-------------------|-------|
| तार | सु सु रि रि | सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु नि नि | धु धु |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | पु पु धु धु नि नि पु पु सु सु पु पु धु धु सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु गु गु सु सु पु पु गु गु रि रि गु गु सु सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | रि रि सु सु रि रि गु गु सु सु ५ लु लु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | गु रि रि सु सु रि रि मु मु गु गु रि रि गु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | पु पु मु मु गु गु मु मु धु धु फु फु मु मु पु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु पु पु धु धु नि नि धु धु |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-------------|-------------------|
| तार | रि रि सु सु | सु सु शु शु रि रि |
| मध्य | नि नि | नि नि |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|---|
| तार | सु सु रि रि मु मु शु शु रि रि रि रि शु शु |
| मध्य | |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------------|
| तार | मु मु रि रि सु सु रि रि शु शु सु सु |
| मध्य | नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | गु रि रि सु सु रि रि मु मु गु गु रि रि गु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | पु पु मु मु गु गु मु मु धु धु पु पु मु मु पु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु पु पु धु धु नि नि धु धु |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-------------|-------------------|
| तार | रि रि सु सु | सु सु गु गु रि रि |
| मध्य | नि नि | नि नि |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|---|
| तार | सु सु रि रि सु सु गु गु रि रि रि रि गु गु |
| मध्य | |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-------------------------------------|-------|
| तार | सु सु रि रि सु सु रि रि गु गु सु सु | |
| मध्य | | नि नि |
| मन्द्र | | |

| | | |
|--------|-------------------|-------|
| तार | सु सु रि रि | सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु नि नि | धु धु |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | पु पु धु धु नि नि पु पु सु सु पु पु धु धु सु सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | गु गु सु सु पु पु गु गु रि रि गु गु सु सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | रि रि सु सुरि रि गु गु सु सु सु सु गु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | रि रि सु सु रि रि मु मु गु गु रि रि गु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | पु पु मु मु गु गु मु मु धु धु पु पु मु मु पु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु पु पु धु धु नि नि धु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | रि रि सु सु सु सु गु गु रि रि |
| मध्य | नि नि नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु सु रि रि मु मु गु गु रि रि गु गु पु पु मु |
| मध्य | |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | मु गु गु गु गु मु मु पु पु गु गु रि रि गु गु |
| मध्य | |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------------|
| तार | मु मु रि रि सु सु रि रि गु गु सु सु |
| मध्य | नि नि |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-------------------|-------|
| तार | सु सु रि रि | सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु नि नि | धु धु |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | पु पु धु धु नि नि पु पु मु मु पु पु धु धु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | मु गु गु मु मु पु पु गु गु रि रि गु गु मु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------------|
| तार | |
| मध्य | रि रि सु सु रि रि गु गु सु सु ५ |
| मन्द्र | इति सोमः |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु गु रि गु मु गु रि सु रि सु गु मु पु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | गु रि गु पु सु पु धु पु सु गु मु धु पु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | सु |
| मध्य | नि धु पु मु पु नि धु नि नि धु पु पु धु नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------------|
| तार | सु |
| मध्य | नि धु नि पु सु पु धु नि धु पु धु सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | गु सु पु धु पु सु पु गु रि गु सु पु सु गु |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|---------------------------------|------------|
| तार | | |
| मध्य | सु रि सु रि गु सु गु रि गु सु ५ | |
| मन्द्र | | इति श्रीवा |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु गुरि सु सु गुरि सु रि सु गु प पु सु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | रि गु पु सु धु धु पु सु गुं मुं धु पु नि नि धु |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|----------------|-------------------|
| तार | सु सु | सु |
| मध्य | पु सु पु नि धु | नि धु पु पु धु नि |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|---|
| तार | सु |
| मध्य | धु नि पु सु पु पु नि पु पु धु सु गु सु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | धु धु सु पु गु रि गु सु पु पु गु सु रि सु रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------|
| तार | |
| मध्य | गु सु सु रि गु सु ५ |
| मन्द्र | इति भाल |

| | |
|--------|---------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु सु रि रि गु गु सु गु रि रि - रि गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | गु गु सु पु सु गु सु गु रि गु गु सु पु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | धु पु सु पु सु गु सु सु पु पु धु धु नि धु पु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु |
| मध्य | पु सु पु पु धु धु नि नि नि धु नि धु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु |
| मध्य | धु नि धु नि नि नि धु धु पु पु सु पु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| गंध्य | पु धु नि धु धु पु पु सु सु सु सु पु सु पु धु पु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मन्त्र | सुसुगुगु रिगुसुगुसुपु सुसुगुगुरिरि |
| मन्त्र | |

| | |
|--------|---------------------------|
| तार | |
| मन्त्र | सुरिगुरिगुसुगुगुरिरिसुसु५ |
| मन्त्र | इति प्रकाश |

नर ७.

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | सुसु |
| मन्त्र | सुरिगुसुपुधुनि निधुपुसुगुरिसु५ |
| मन्त्र | इति विस्तीर्ण. |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु सु रि रि गु गु सु सु पु पु धु धु नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------|
| तार | सु सु सु सु |
| मध्य | नि नि धु धु पु पु सु सु गु |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|------------------|------------|
| तार | | |
| मध्य | गु रि रि सु सु ५ | इति निकर्ष |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु सु सु रि रि रि गु गु गु मु मु मु पु पु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------|
| तार | सु सु सु सु सु सु |
| मध्य | धु धु धु नि नि नि नि नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | नि धु धु धु पु पु पु मु मु मु गु गु गु रि रि रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------|
| तार | |
| मध्य | रि लु सु लु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | खु लु सु लु रि रि रि रि गु गु गु गु मु मु |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|---------------------------------------|----|
| तार | | सु |
| मध्य | मु मु प प प प धु धु धु धु नि नि नि नि | |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|-------------------------|
| तार | सु सु सु सु सु सु सु सु |
| मध्य | नि नि नि नि धु धु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | धु पु पु पु पु सु सु सु सु गु गु गु गु रि रि |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-------------------|----------------|
| तार | | |
| मध्य | रि रि सु सु सु सु | इति गात्रवर्णः |
| मन्द्र | | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु सु सु रि रि रि रि गु गु गु गु मु मु मु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु सु |
| मध्य | मु पु पु पु पु धु धु धु धु नि नि नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | नि नि नि नि धु धु धु धु पु पु पु पु मु मु मु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | मु गु गु गु गु रि रि रि रि सु सु सु |
| मन्द्र | इति विद्. |

नंबर. १०

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु सु रि सु रि गु सु रि गु मु सु रि ग म |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| तार | |
| मध्य | प ॐ सु रि ग म प ध सु रि ग म प |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------|
| तार | सु प्र सु |
| मध्य | ध नि . ५ सु रि ग म प ध नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | नि ध प म ग रि सु प्र नि ध प म ग रि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु १ ध प म ग रि सु प म ग रि सु १ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु गुरिसु गुरिसु रिसु सु . ५ |
| मन्द्र | इति हसित |

नवर ११

| | |
|--------|--------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सु रि रि ग ग म म प प ध ध नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--------------------------|
| तार | सु सु |
| मध्य | नि नि ध ध प प म म ग ग रि |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-------|-------------|
| तार | | |
| मध्य | रि सु | इति प्रैखित |
| मन्द्र | | |

नवर १२.

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु सु गु गु रि रि सु सु गु गु पु पु मु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | सु सु सु सु |
| मध्य | धु धु पु पु नि नि धु धु धु धु नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | नि पु पु धु धु मु मु पु पु गु गु मु मु रि |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|----------------|------------|
| तार | | |
| मध्य | रि गु गु सु सु | इत्युद्धित |
| मन्द्र | | |

नंबर . १३

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु रि गु रि गु मु गु मु षु मु पु धु पु धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------------------|
| तार | सु सु |
| मध्य | नि धु नि नि धु नि धु षु धु पु म् |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------|
| तार | |
| मध्य | पु मु गु मु गु रि गु रि सु |
| मन्द्र | |

नंबर. १४

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु सु रि गु रि रि गु मु गु गु मु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु सु |
| मध्य | मु मु पु ध्रु पु पु ध्रु नि ध्रु ध्रु नि ; |
| मन्द्र | . |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | नि ध्रु ध्रु नि ध्रु पु पु ध्रु पु मु मु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | मु गु गु मु गु रि रि गु रि सु सु |
| मन्द्र | इत्यादिभिः |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु सु सु सु रि रि गु म रि रि रि रि गु गु मु पु |
| मन्द्र | |

नंबर १५

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | गु गु गु गु मु मु पु धु मु मु गु मु पु पु धु नि पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---|
| तार | सु सु |
| मध्य | पु पु पु धु धु नि नि धु धु पु पु पु पु नि धु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | पुपुसुसुसुसु ध्रुपुसुसुगुगुगुगु पुसुगु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | |
| मध्य | गुरि रिरि रिरि सुगुरि रिसुसुसुसु |
| मन्द्र | इत्युद्वाहितः |

१६ नंबर

| | |
|--------|------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | सुरिगुगुगु . ५ रिसुसुसुसु . ५ गुसु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | पु पु पु . ५ सु पु धु धु धु . ५ पु धु नि नि नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|-----------------------|
| तार | सु सु सु . ५ सु सु सु |
| मध्य | . ५ धु नि नि धु . ५ |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|---------------------------------------|
| तार | |
| मध्य | नि नि नि धु पु . ५ धु धु धु पु मु . ५ |
| मन्द्र | |

तार

मध्य

प॒ प॒ प॒ म॒ गु॒ . ५ म॒ म॒ म॒ गु॒ रि॒ . ५

मन्द्र

तार

मध्य

ग॒ ग॒ ग॒ रि॒ सु॒ . ५

इत्यादिगोष्ठ्याकार

मन्द्र

नंबर. १७

तार

मन्द्र

सु॒ रि॒ गु॒ मु॒ सु॒ गु॒ रि॒ सु॒ सु॒ रि॒ गु॒ रि॒ सु॒ रि॒ गु॒ मु॒

मध्य

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मन्द्र | रि गु सु पु उ ऋ ग रि रि गु सु ग रि गु सु पु ग |
| मध्य | |

| | |
|--------|---|
| तार | |
| मध्य | सु पु धु धु धु ग सु पु ग सु पु धु सु पु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | धु नि नि धु पु सु सु पु धु पु सु पु धु नि पु धु नि |
| मन्द्र | |

| | | |
|--------|-----------------------|----------|
| नाम | सुसु | सुसु |
| मात्र | त्रिधुपुपुधुति ७७धुति | त्रिधुपु |
| मन्त्र | | |

| | | |
|--------|------------------|-------------------|
| नाम | सुसु | |
| मात्र | पुत्रिधुपुपुधुति | त्रिधुपुति ७७सुपु |
| मन्त्र | | |

| | | |
|--------|--------------|----------------------|
| नाम | | |
| मात्र | धुपुसुसुधुति | त्रिधुपुसुधुपुसुसुधु |
| मन्त्र | | |

तार ।

मथ्य । मु गु गु मु पु धु धु पु मु गु पु मु गुरि गु

मन्द्र ।

तार ।

मथ्य । मु गु रि रि गु मु पु पु मु गु रि मु गु रि सु

मन्द्र ।

तार ।

मथ्य । रि गु रि सु सु रि गु मु मु गु रि सु ।

मन्द्र ।

इतिमन्द्रादीः

तार

मध्य

सु गुरि गु मु गुरि गुरि गुरि सु सु रि

मन्द्र

तार

मध्य

गु मु रि मु गु मु पु मु गु मु गु मु गुरि रि

मन्द्र

तार

मध्य

गु मु पु गु पु मु पु धु पु मु पु मु पु मु गु गु

मन्द्र

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | सु पु धु सु धु पु धु नि धु पु धु पु धु पु सु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु |
| मध्य | सु पु धु नि पु नि धु नि नि धु नि धु नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तार | सु सु |
| मध्य | धु पु पु धु नि नि धु पु पु धु नि |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | सु |
| मध्य | धु नि धु नि नि धु नि पु नि धु पु सु मु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | पु धु पु धु पु धु नि धु पु धु सु धु पु सु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | गु सु पु सु पु सु पु धु पु सु पु गु पु सु गु |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | रि रि गु मु गु मु गु मु पु मु गु मु रि मु गु . |
| मन्द्र | |

| | |
|--------|--|
| तार | |
| मध्य | रि सु सु रि गु रि गु रि गु मु गु रि गु 'सु |
| मन्द्र | इति मन्द्रमयः . |

